सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-29 अंक-16 22 अगस्त से 5 सितम्बर, 2014 मुख्य संपादक-कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती Email: sarvaharadrishtikon@gmail.com मूल्य : 2 रुपये

5 अगस्त, कॉमरेड शिवदास घोष का 38वां स्मृति दिवस

देश भर में मनाया संघर्ष को नई बुलन्दियों पर ले जाने के संकल्प के साथ

5 अगस्त का दिन अपने दिवंगत नेता एसयूसीआई (सी) के संस्थापक महासचिव, इस युग के महान् मार्क्सवादी चिन्तनकार कॉमरेड शिवदास घोष को श्रद्धांजली देने और उनके सपनों को साकार बनाने की शपथ लेने का दिन है। उनके 38वें स्मृति दिवस पर देश भर में स्मृति सभाएं की गई। कॉमरेड शिवदास घोष की तस्वीर पर माल्यार्पण किया गया। हर जगह सभा की शुरूआत कॉमरेड घोष पर रचित गीत से हुई और समापन अंतर्राष्ट्रीय गीत के साथ हुआ।

कोलकाता में विशाल जनसभा को सम्बोधित करते हुए कॉमरेड प्रभाष घोष (इन्सेट में) समाचार अगले अंक में

दिल्ली

इस अवसर पर यहाँ गांधी शान्ति प्रतिष्ठान के सभागार में 5 अगस्त को सभा की गई। सभा की अध्यक्षता पार्टी के दिल्ली राज्य सांगठनिक कमेटी के वरिष्ठ सदस्य कॉ. प्राण शर्मा ने की। एस.यू.सी.आई. (कम्युनिस्ट) की केन्द्रीय कमेटी के सदस्य और हरियाणा राज्य कमेटी के सचिव कॉ. सत्यवान सभा के मुख्य वक्ता थे। पार्टी के दिल्ली राज्य सचिव कॉ. प्रताप सामल ने भी सभा को सम्बोधित किया।

कॉ. सत्यवान ने इस युग के अन्यतम महान मार्क्सवादी चिंतनकार कॉमरेड शिवदास घोष द्वारा देश में क्रान्तिकारी पार्टी के गठन के लिए चलाये गये गहन और कठिन संघर्ष का उल्लेख किया जो आज 22 राज्यों में फैल चुकी है। इस प्रक्रिया में कॉ. शिवदास घोष ने मार्क्सवाद-लेनिनवाद के ज्ञान भण्डार को समृद्ध किया। जीवन के हर पहलू के बारे में उनकी अमूल्य सीखों को अपने जीवन में आत्मसात करने के लिए कॉ. सत्यवान ने सभी का आह्वान किया।

उन्होंने कहा कि केन्द्र में घोर साम्प्रदायिक व कट्टर हिन्दुत्ववादी बीजेपी नेता नरेन्द्र मोदी के भारी बहुमत से सत्ता में आ जाने और प्रधानमंत्री पद पर बैठ जाने से देश में फासीवाद के काले बादल मंडरा रहे हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के कुशासन और जनविरोधी नीतियों से उपजे जनआक्रोश का बीजेपी ने चालाकी से सरकारी कुर्सी हथियाने में फायदा उठाया। कारपोरेट घरानों ने लाखों करोड़ रुपये चुनाव में उनके प्रचार में लगाये। हालांकि थोड़े से दिनों में ही मोदी सरकार के असली चेहरे से पर्दा उठ गया जब इसने जनविरोधी कदम उठाने में कांग्रेस सरकार को भी पीछे छोड़ दिया। बैंक, बीमा, प्रतिरक्षा और रेलवे में एफडीआई लायी जा रही है। रेल के किराये-मालभाड़े में बेतहासा बढ़ोतरी कर दी गई है। तेल व रसोई गैस के दाम बढ़ाये जा रहे हैं। महंगाई और

(शेष पृष्ठ 2 पर)

दिल्ली में स्मृति सभा को सम्बोधित करते हुए कॉमरेड सत्यवान

एसयूसीआई(सी) ने की इराक पर अमेरिकी हवाई हमले तुरंत रोकने की मांग

विश्वव्यापी साम्राज्यवाद-विरोधी जुझारू आन्दोलन गठित करने के लिए दुनिया के शान्ति पसन्द लोगों का आह्वान

एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) की केन्द्रीय कमेटी द्वारा 9 अगस्त को जारी एक बयान में कहा गया :

कपटपूर्ण बहाने की आड़ में स्वतंत्र सार्वभौम इराक पर आक्रमण और कब्जा करने तथा वहां एक पिट्ठू हुकूमत बैठाने के बाद सुरक्षाबलों को वापस बुलाने का दिखावा करते हुए इराकी जनता के संयुक्त स्वतंत्रता आन्दोलन की बढ़त को रोकने के लिए धूर्ततापूर्वक शिया-सुन्नी के झगड़ों को हवा दी जा रही है और विद्रोही और अलगाववादी गुटों को गुप-चुप तरीके से हथियार और अन्य मदद देकर इराक के कुर्द इलाके की राजधानी और अमेरिकी तेल कम्पनियों के गढ़ इर्बिल पर कब्जा करने के लिए आगे बढ़ने से पहले, जंगखोर आधिपत्यवादी अमेरिकी साम्राज्यवाद ने एक मिलीटेंट संगठन आईएसआईएस को काबू करने के नाम पर हवाई हमले करते हुए इराक पर अब दूसरा सैन्य हमला किया है। यह स्पष्ट है कि अमेरिकी बमबारी का मकसद इराक में अमेरिकी हितों की रक्षा करना, सशस्त्र आईएसआईएस ब्रिगेड द्वारा अमेरिकी तेल प्रतिष्ठानों पर कब्जा किये जाने से रोकना, क्षेत्र में युद्ध-तनाव बनाये रखना और इराक में नये सिरे से सेना तैनात करने का एक नया बहाना खोजना है। पेंटागन का यह दावा निरा झांसा है कि अमेरिकी हवाई हमले का मकसद आईएसआईएस आतंकवादियों द्वारा किये जाने वाले 'नरसंहार' को रोकना है क्योंकि खुद अमेरिका ने दुष्टतापूर्ण सैनिक हस्तक्षेप कर इराक पर किये गैरकानूनी कब्जे के दौरान 4 लाख से ज्यादा मासूम लोगों को मौत के घाट उतार कर इराक में जघन्य नरसंहार किया है।

हम मांग करते हैं कि अमेरिकी साम्राज्यवादी हवाई हमले तुरंत बंद करें, अपने तमाम सैन्यबलों को वापस बुलायें, तनाव और झगड़े भड़काने के लिए इराक में विभिन्न अलगाववादी साम्प्रदायिक ताकतों को उकसाने और पृष्ठपोषण करने से बाज आयें, इराक के अन्दरूनी मामलों में दखल देना बंद करें और इराकी जनता को इस बात का फैसला खुद करने दें कि तमाम विदेशी हस्तक्षेपों से मुक्त अपनी मातृभूमि के लिए वे किस तरह का शासन चाहते हैं। जब यहूदीवादी इजराइल गाजा के मासूम लोगों पर कहर ढा रहा है, महिलाओं व बच्चों को अंधाधुंध मार रहा है और अब अमेरिकी युद्धक विमान इराक पर बमबारी कर रहे हैं ऐसे में दुनिया के साम्राज्यवाद-विरोधी, युद्ध-विरोधी शांतिपसंद लोगों के लिए यह अत्यावश्यक है कि वे दुनिया के हर हिस्से में साम्राज्यवाद-विरोधी, खासकर अमेरिकी साम्राज्यवाद-विरोधी संगठित दीर्घस्थाई आन्दोलन करने के लिए लामबंद हों। एकमात्र यही भयावह साम्राज्यवादी षडयंत्रों और रणहुंकारों के खिलाफ एक अवरोधक का काम कर सकता है।

5 अगस्त, कॉमरेड शिवदास घोष ....

(पृष्ठ 1 का शेष)

भी बढ़ गई है। किसानों की जमीने छीनने के लिए एसईजैड नये सिरे से बनाये जा रहे हैं। साम्प्रदायिक तनाव व नफरत फैला कर मेहनतकश वर्ग की एकता को तोड़ा जा रहा है। शिक्षा का भगवाकरण किया जा रहा है। धारा 370 हटाने, कॉमन सिविल कोड लागू करने जैसे विवादित विषयों को तूल दिया जा रहा है। प्रशासन के हाथों में सत्ता का केन्द्रीकरण किया जा रहा है। पूंजीपतियों को करों में रियायत और राहत पैकेज दिये जा रहे हैं। जनता के लिए यह बेहद हानिकर है। बीजेपी की मोदी सरकार पूंजीपति वर्ग को उसके असमाधेय बाजार संकट व मंदी से उबारने की भरसक कोशश कर रही है।

उन्होंने इन हालात का मुकाबला करने के लिए उन्नत नीति-नैतिकता के आधार पर जोरदार सतत संयुक्त आन्दोलन खड़ा करने पर बल दिया।

लखनऊ (उ.प्र.) : सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर आफॅ इण्डिया (कम्युनिस्ट) के संस्थापक, मार्क्सवादी दार्शनिक सर्वहारा के महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष का स्मृति दिवस 5 अगस्त को प्रदेश की राजधानी लखनऊ में अमीनाबाद स्थित गंगा प्रसाद वर्मा मेमोरियल हाल में मनाया गया। इस अवसर पर एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) की उत्तर प्रदेश राज्य कमेटी ने एक सभा का आयोजन किया जिसकी अध्यक्षता पार्टी के राज्य सचिवमण्डल के सदस्य कॉमरेड जगदीश चन्द्र अस्थाना व संचालन पार्टी के प्रदेश कार्यालय सचिव कॉमरेड जगन्नाथ वर्मा ने किया। सभा के मुख्य वक्ता पार्टी के केन्द्रीय कमेटी सदस्य व उड़ीसा राज्य सचिव कॉमरेड धुर्जटी दास थे। कॉमरेड शिवदास घोष का 5 अगस्त 1976 को हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया था। पूरे देश में पार्टी 5 अगस्त को कॉमरेड शिवदास घोष स्मृति दिवस श्रद्धा एवं सम्मान के

लखनऊ में स्मृति सभा को सम्बोधित करते हुए कॉमरेड धुर्जटी दास

साथ मनाती है।

स्मृति सभा के मुख्य वक्ता कॉ. धुर्जटी दास ने उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुये कहा कि वर्तमान समय में देश में जो सामाजिक एवं सांस्कृतिक संकट छाया हुआ है, उसका कारण है वर्तमान पूँजीवादी व्यवस्था द्वारा प्रचारित-प्रसारित एवं पोषित घटिया पूँजीवादी संस्कृति। इससे लड़ने के लिए उन्नत नीति-नैतिकता युक्त क्रान्तिकारी विचारधारा के आधार पर गठित सर्वहारा संस्कृति अपनानी चाहिए। कॉ. घोष के अनुसार जिसका सारतत्व है व्यक्ति को अपना व्यक्तिगत स्वार्थ बेहिचक सामाजिक स्वार्थ के साथ एकाकार कर देना। पार्टी के नेता-कार्यकर्ताओं को अपने निजी जीवन में इस संघर्ष को अनिवार्य रूप से चलाना ही होगा तभी सही मायने में हम कॉ. शिवदास घोष के विचारों के अनुयायी हो सकेंगे। खुद कॉ. शिवदास घोष ने आजादी आन्दोलन में अपना सब कुछ त्याग दिया था और उन्होंने यह समझ लिया था कि एक सच्ची कम्युनिस्ट पार्टी के बगैर देश की जनता को सही मायने में आजादी नहीं मिल पायेगी। अत: कॉ. शिवदास घोष ने अपने जीवन का एक-एक कतरा इस पार्टी को खड़ा करने में समर्पित कर दिया। आज पार्टी उनके दिखाये रास्ते पर चलते हुये जन-जीवन की तमाम समस्याओं को लेकर पूरे देश भर में आन्दोलनरत है। कॉ. दास ने आह्वान किया कि पार्टी के सभी नेता, कार्यकर्ता एवं समर्थक अपने निजी जीवन में कॉ. शिवदास घोष की सीखों को लागू करने में लग जायें।

सभाध्यक्ष कॉ. जगदीश चन्द्र अस्थाना ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि वर्तमान में मोदी सरकार आम जनता के जीवन पर एक-पर-एक बोझ डालती जा रही है जैसे-रेल भाड़े में वृद्धि, डीजल व पेट्रोल के दामों में बढ़ोतरी होने से महंगाई आसमान छूने लगी है। बेरोजगारी एवं भ्रष्टाचार को खत्म करने की दिशा में कोई पहलकदमी नजर नहीं आ रही है। यह सरकार संकटग्रस्त पूँजीपतियों के लिए पूँजीनिवेश के अवसर खोजने में ही अपना महान दायित्व समझ रही है। इस सरकार से आम जनता को कुछ भी हासिल नहीं होगा। अपनी समस्याओं से निजात पाने के लिए आम-अवाम को जन-आन्दोलन का रास्ता अख्तियार करना पड़ेगा। पार्टी के कार्यकर्ताओं को जन-आन्दोलन खड़ा करने की दिशा में लग ही जाना होगा। इसके अलावा राज्य सचिव कॉ. बी.एन. सिंह का लिखित भाषण कॉ. हरिशंकर मौर्य द्वारा पढ़ा गया। अन्तर्राष्ट्रीय गान के साथ सभा का समापन हुआ।

बुढ़लाडा (पंजाब) : सर्वहारा के महान नेता, इस युग के महान मार्क्सवादी दार्शनिक व चिंतक तथा हमारी पार्टी एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के संस्थापक महासचिव, नेता, शिक्षक व पथ प्रदर्शक कॉमरेड शिवदास घोष के स्मृति दिवस पर 9 अगस्त को बुढ़लाडा के एफसीआई हॉल में स्मृति सभा हुई। सभा के मुख्य वक्ता थे पार्टी के केन्द्रीय कमेटी सदस्य कॉ. शंकर साहा। उन्होंने कॉमरेड शिवदास घोष के जीवन-संघर्ष पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उन्होंने बहुत अर्सा पहले ही सीपीएसयू में जल रहे संशोधनवादी रुझान के बारे में चेतावनी दे दी थी जिसके चलत सीपीएसयू व रूस में समाजवाद ध्वस्त हो गया और पूँजीवाद की पुनर्स्थापना हो गई। उन्होंने देश में लागू की जा रही पूँजीपति परस्त और जनविरोधी नीतियों की निन्दा करत हुए कहा कि इन के चलते लोगों का जीना दूभर हो गया है। इन दमघोंटू हालात के खिलाफ दुनिया भर में लोग आवाज उठाते हुए सड़कों पर उतरे हुए हैं। पूँजीपति शासकों का सिंहासन हिल रहा है। यहाँ इन स्वत:स्फूर्त आन्दोलनों को क्रान्तिकारी दिशा देने में क्रान्तिकारी पार्टी की भूमिका है। उन्होंने देश में एकमात्र सही कम्युनिस्ट पार्टी एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) को मजबूत करने की अपील की। एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) जनआन्दोलनों को सही दिशा देने में अहम भूमिका निभा रही है।

जनसभा की अध्यक्षता पार्टी के पंजाब राज्य प्रभारी कॉ. अमीन्दर पाल सिंह ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में पार्टी के तमाम नेताओं, कार्यकर्ताओं व समर्थकों से मार्क्सवाद-लेनिनवाद- शिवदास घोष चिंतन से लैस होकर पंजाब में पार्टी को मजबूत करने, जनता को संगठित करने तथा शराबखोरी और नशाखोरी के खिलाफ गांव स्तर पर मुहीम चलाने की अपील की।

कॉ. जगतार सिंह, थाना सिंह, कुलविन्दर सिंह, जसविन्दर सिंह रूप्पल और इन्द्रजीत जोधा ने भी सभा को सम्बोधित किया। सभा का संचालन कॉ. इन्दर सिंह ने किया।

बड़ोदरा(गुजरात) : यहां 8 अगस्त को एस.यू.सी.आई. (सी) के संस्थापक महासचिव सर्वहारा के महान नेता कॉ. शिवदास घोष की स्मृति सभा हुई। सभा में अहमदाबाद, बड़ोदरा व सूरत -3 जिलों से पार्टी कॉमरेड, समर्थक और हमदर्द शामिल हुए। सभा की अध्यक्षता पार्टी की राज्य सांगठनिक कमेटी सदस्य कॉ. मीनाक्षी जोशी ने की। पार्टी की केन्द्रीय कमेटी सदस्य कॉ. छाया मुखर्जी मुख्य वक्ता थी। सभा को पार्टी के राज्य सचिव कॉ. द्वारिका नाथ रथ और बड़ोदरा जिला सांगठनिक कमेटी सचिव कॉ. तपन दासगुप्ता ने भी सम्बोधित किया।

बड़ोदरा में स्मृति सभा को सम्बोधित करते हुए कॉमरेड छाया मुखर्जी

मुम्बई (महाराष्ट्र) : यहां 5 अगस्त को पार्टी की मुम्बई सांगठनिक कमेटी की ओर से नागपुर, यवतमाल, वार्धा व महाराष्ट्र के अन्य जिलों के कॉमरेडों व समर्थकों की मदद से कॉ. शिवदास घोष की स्मृति सभा जनता केन्द्र हाल में आयोजित की गई। सभा की अध्यक्षता पार्टी के मुम्बई सांगठनिक कमेटी सचिव कॉ. अनिल त्यागी ने की। पार्टी की केन्द्रीय कमेटी सदस्य कॉ. छाया मुखर्जी मुख्य वक्ता थी। मुम्बई सांगठनिक कमेटी सदस्य कॉ. कुमार कुलश्रेष्ठ ने सभा का संचालन किया।

मुम्बई में सभा को संबोधित करते हुए कॉ. छाया मुखर्जी

चेन्नई (तमिलनाडु) : यहां 9 अगस्त को एस.यू.सी.आई. (कम्युनिस्ट) की तमिलनाडु राज्य सांगठनिक कमेटी की ओर से इस युग के अन्यतम श्रेष्ठ मार्क्सवादी चिंतनकार, पार्टी के संस्थापक, शिक्षक व पथप्रदर्शक दिवंगत नेता कॉ. शिवदास घोष की स्मृति सभा आयोजित की गई। सभा की अध्यक्षता पार्टी की राज्य सांगठनिक कमेटी सचिव कॉ. ए. रंगास्वामी ने की। पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के सदस्य कॉ. सी. के. लुकोस मुख्य वक्ता थे। राज्य सांगठनिक कमेटी सदस्य कॉ. ए. अनवरातन ने उनके भाषण का अनुवाद किया। नोर्थ चेन्नई स्थानीय सांगठनिक कमेटी ने 5 अगस्त को रोटलर स्ट्रीट स्थित पार्टी कार्यालय में और व्यासरपडी पार्टी ईकाई ने एमकेबी नगर में पार्टी कार्यालय में कॉमरेड शिवदास घोष स्मृति सभा आयोजित की।

मदुराई और थेनी : मदुराई के पार्टी कार्यालय में कॉमरेड शिवदास घोष स्मृति सभा की गई। कॉ. रंगास्वामी मुख्य वक्ता रहे। सभा की अध्यक्षता पार्टी की मदुराई जिला सांगठनिक कमेटी के सदस्य कॉ. एम जे वोल्टेयर ने की।

5 अगस्त को थेनी में पार्टी कार्यालय में सभा की गई। सभा की अध्यक्षता पार्टी की मदुराई-डिंडीगल-थेनी जिला सांगठनिक कमेटी के सचिव कॉ. टी सत्यमूर्ति ने की। कॉ. रंगास्वामी मुख्य वक्ता रहे।

दुर्ग (छ.ग.) : 5 अगस्त को महान मार्क्सवादी दार्शनिक, चिंतनकार, हमारे शिक्षक व पथ प्रदर्शक कॉमरेड शिवदास घोष का स्मृति दिवस पूरे सम्मान के साथ छितरमल धर्मशाला, इंदिरा मार्केट, दुर्ग में मनाया गया। सभा की शुरूआत में कॉमरेड एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) की गुजरात राज्य कमेटी के सचिव कॉ. द्वारिकानाथ रथ, दुर्ग जिला समिति सचिव कॉ. विश्वजीत हारोडे, दुर्ग जिला समिति सदस्य कॉ. आत्मा राम साहू व पार्टी कार्यकर्ताओं के द्वारा माल्यार्पण किया गया।

मुख्य वक्ता कॉ. द्वारिकानाथ रथ ने कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं और वर्तमान राष्ट्रीय -अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति पर प्रकाश डालते हुए सभा को सम्बोधित किया। इस कार्यक्रम के अध्यक्ष कॉमरेड विश्वजीत हाराडे थे। कॉमरेड आत्मा राम साहू ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन कॉमरेड महेन्द्र साहू ने किया। इस कार्यक्रम में देवेन्द्र पाटिल, नीतू साहू, प्रवीण शर्मा, भूनेश्वरी साहू, शुभम पांडे, आशुतोष साहू, विमल दास, चंचल कुमार, अनिता साहू, मधु अग्रवाल, पूजा सागर, दीपा कौशल सहित दर्जनों कार्यकर्ता शामिल हुए।

दुर्ग में स्मृति सभा को सम्बोधित करते हुए कॉमरेड द्वारिकानाथ रथ

भोपाल (म.प्र.) : 9 अगस्त को स्थानीय सामुदायिक

(शेष पृष्ठ 4 पर)

'प्राथमिक जरूरत : शिक्षा बचाओ' विषय पर विचार गोष्ठी आयोजित

जमशेदपुर (झारखण्ड) : 20 जुलाई को श्री कृष्ण सिन्हा संस्थान, बिष्टुपुर में अखिल भारतीय शिक्षा बचाओ कमिटी, झारखंड शाखा के तत्वावधान में 'प्राथमिक जरूरत : शिक्षा बचाओ' विषय पर एक विचार गोष्ठी आयोजित की गयी। पूर्वी सिंहभूम जिला के विभिन्न प्रखंडों से भारी संख्या में शिक्षक, अभिभावक, छात्र और प्रोफेसर इसमें शामिल हुए। जमशेदपुर के अलावे सरायकेला-खरसवां, रांची, बोकारो, हजारीबाग से भी प्रतिनिधि उपस्थित हुए।

जमशेदपुर में विचार-गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए सौरभ मुखर्जी

झारखंड एकेडेमिक काउंसिल के पूर्व चेयरमैन डॉ. शालीग्राम यादव की अध्यक्षता में विचार गोष्ठी की शुरूआत हुई। सबसे पहले कमिटी के प्रांतीय सचिव सुमित राय ने सेमिनार का मूल विषय व आधार प्रस्तुत किया। इस सन्दर्भ में बोलते हुए विभिन्न शिक्षाविदों व बुद्धिजीवियों ने झारखंड की शैक्षणिक स्थिति पर गहरी चिंता व्यक्त की। कमिटी के अध्यक्ष प्रो. मित्रेश्वर ने कहा कि झारखंड की शैक्षणिक स्थिति बद से बदतर होती जा रही है। विद्यार्थी यहां से दूसरे राज्यों में पलायन करते जा रहे हैं। पूरी शिक्षा व्यवस्था को भ्रष्टाचार दीमक की भांति चाट रहा है। शिक्षा पदाधिकारी रिश्वत के बिना कोई काम नहीं कर रहे हैं। शिक्षक गैर-शैक्षणिक कामों में व्यस्त हैं। मातृभाषा में पढ़ने के अधिकार से छात्र वंचित हैं। कॉलेजों में पठन-पाठन का माहौल न के बराबर है, प्राइवेट स्कूलों में अभिभावकों का जमकर शोषण किया जा रहा है।

मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए कोलकाता के विशिष्ट शिक्षाविद व शिक्षा बचाओ कमिटी के सर्वभारतीय सचिव मंडली के सदस्य सौरभ मुखर्जी ने कहा - शिक्षा का काम है इंसान बनाना, चरित्र का गठन करना। इसलिए शिक्षा समाज की रीढ़ है, सभ्यता का आधार है। लिहाजा हर जनकल्याणकारी सरकार की यह जवाबदेही है कि वह देश की जनता को शिक्षित करने का इंतजाम करे। परंतु अफसोस ऐसा नहीं हो रहा है। आज शिक्षा जगत पर एक अभूतपूर्व संकट का बादल मंडरा रहा है। इसका सामना करने के लिये देश भर में जो विशाल कर्मयज्ञ चल रहा है, उसी का नाम है ''अखिल भारतीय शिक्षा बचाओ आंदोलन''।

ब्रिटिशों ने इस देश में कई शिक्षा नीति तैयार की थी। परंतु उनका उद्देश्य सही मायने में शिक्षा का प्रचार-प्रसार करना नहीं, बल्कि मुख्य उद्देश्य ही था इस देश में ब्रिटिश हुकूमत को चलाने के लिये आवश्यक कुछ अफसर, कर्मचारी तैयार करना। शिक्षा का जो मूल लक्ष्य है 'इंसान बनाना' उसे जानबूझकर ही नजरअंदाज किया गया। इसलिए हमारे नवजागरणकाल एवं स्वतंत्रता आंदोलन के मनीषियों ने 'सब के लिये शिक्षा, सब के लिए एक समान शिक्षा और सब के लिए सही मायने में शिक्षा' की मांग की थी। यदि एक वाक्य में कहा जाए तो शिक्षा होगी धर्मनिरपेक्ष, वैज्ञानिक व जनवादी। परंतु ऐसा नहीं हुआ। अखिल भारतीय शिक्षा बचाओ कमिटी का लक्ष्य है शिक्षा से संबंधित उपरोक्त अवधारणा को राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित करना।

सभा में निर्णय लिया गया कि झारखंड के प्रमुख शिक्षाविद व बुद्धिजीवियों की एक टीम महामहिम राज्यपाल व शिक्षामंत्री से अविलम्ब मिलकर राज्य की बदहाल शैक्षणिक स्थिति से उन्हें अवगत करायेंगी। इसके अलावा विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपतियों को शिक्षाविदों की राय व मांगों से अवगत कराया जायेगा। प्रखंड स्तर से लेकर जिला स्तर तक कमिटी बनायी जायेगी और दिसम्बर के अंत तक राज्य सम्मेलन आयोजित किया जायेगा। नवम्बर महीने में रांची में शिक्षक, प्रोफेसर, शिक्षकेत्तर कर्मचारी, अभिभावक, छात्र व आम शिक्षाप्रेमी जनता को सम्मिलित करते हुए शिक्षा बचाओ कमिटी की ओर से एक विशाल प्रदर्शन किया जायेगा। शिक्षा बचाओ कमिटी के प्रतिनिधिमंडल स्कूल व विश्वविद्यालयों का परिदर्शन करेंगे और उसमें व्याप्त कमियों को जिम्मेवार पदाधिकारी तक पहुंचायेंगे और मांगें पूरी न होने पर जनवादी तरीके से आंदोलन गठित किया जाएगा।

सेमिनार में मुख्य रूप से नंद कुमार उन्मन, डॉ. अहमद बद्र, प्रो. पी.सी.भगत, सुनील कुमार ठाकुर, अशोक शुभदर्शी, जे.पी. पांडेय, अशोक सिन्हा, अशोक मिश्रा, स्वप्न साहू, उदय हयात, पल्लव विश्वास आदि ने अपना वक्तव्य रखा।

जौनपुर में भूमि अधिग्रहण के खिलाफ धरना एवं प्रदर्शन

जौनपुर (उ.प्र.) : केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा राष्ट्रीय राजमार्ग 56 को लखनऊ से वाराणसी तक फोर लेन बनाने की योजना है। इसके लिए सड़क को 60 मीटर चौड़ा करना है। साथ ही किसानों की उपजाऊ जमीन पर 17 बाईपास मार्ग बनाने की योजना है। जिसमें से अकेले जौनपुर जिले में ही 64 कि.मी. के दायरे में 6 बाईपास बनाये जायेंगे। ये बाईपास त्रिलोचन बाजार जौनपुर शहर, शिवगुलामगंज, नौपेड़वा, धनियामऊ, बदलापुर क्षेत्र में हैं। इन क्षेत्रों में 92 गाँवों की हजारों एकड़ उपजाऊ कृषि योग्य भूमि, मकान, जल संसाधन, पशुधन, पेड़, रोजगार इत्यादि तबाह हो जायेंगे। सरकार की इस जनविरोधी नीति के खिलाफ उत्तर प्रदेश भूमि अधिग्रहण-विरोधी मोर्चा की जौनपुर इकाई के आह्वान पर 1अगस्त को सैकड़ों किसानों व महिलाओं ने जिला मुख्यालय जौनपुर पर धरना एवं प्रदर्शन किया। इसके पहले सिटी रेलवे स्टेशन से जुलूस निकाला गया। बैनर व नारे लिखी तख्तियों को हाथ में लेकर-जान देंगे पर जमीन नही देंगे, बाईपास योजना रद्द करो, पूंजीपतियों की दलाल सरकार होश में आओ, महंगाई पर रोक लगाओ, बेरोजगारों को काम दो, नियमित बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करो आदि जोरदार नारे लगाते हुए जुलूस नगर के प्रमुख मार्गों, पॉलिटेक्निक चौराहा, ओलन्दगंज होते हुए कलेक्ट्रेट परिसर में पहुंचकर धरना सभा में तब्दील हो गया।

धरना सभा की अध्यक्षता मोर्चा के जिलाध्यक्ष पारसनाथ सिंह ने की। संचालन रविशंकर मौर्या ने किया। मोर्चा के जिला मंत्री इन्दुकुमार शुक्ल ने केन्द्र व राज्य सरकार की कार्य पद्धति पर सवाल उठाते हुए आन्दोलन के औचित्य पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने बाईपास योजना को सिरे से खारिज किया और वर्तमान सड़क पर ही फोर लेन बनाने, बाजारों में फ्लाई ओवर व रेलवे

धरने को सम्बोधित करते हुए कॉ. जगन्नाथ वर्मा

क्रासिंग पर ओवर ब्रिज बनाकर कृषकों पर हो रहे हमले को रोकने की अपील की। अन्य वक्ताओं ने अधिग्रहण नीति को 65 प्रतिशत कृषि पर आधारित लोगों के ऊपर हमला बताया। वक्ताओं ने कहा कि आजादी के बाद से ही सभी सरकारों ने किसानों की घोर उपेक्षा कर उन्हें दयनीय हालत में पहुँचा दिया और उनको पूँजीपतियों का आहार बनाने का षड्यन्त्र रच रही हैं। अब किसान इसे और बर्दाश्त नही करेगा। आज पूरे देश में जोरदार किसान आन्दोलन खड़ा करने की जरूरत है। मुख्यमंत्री उ.प्र. को सम्बोधित ज्ञापन जिलाधिकारी जौनपुर को दिया गया। सभा को मोर्चा के प्रान्तीय सचिव कॉ. जगन्नाथ वर्मा, एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) पार्टी के जौनपुर जिला सचिव कॉ. जगदीशचन्द्र अस्थाना एडवोकेट के अलावा प्रवीण कुमार शुक्ल, श्रीपति सिंह, प्रमोद कुमार शुक्ल, बद्रीप्रसाद यादव, अमरनाथ दूबे आदि ने सम्बोधित किया। सभा के पश्चात प्रवीण कुमार शुक्ल ने आन्दोलन के दूसरे चरण की घोषणा करते हुए बताया कि जहाँ-जहाँ बाईपास बनना है उस क्षेत्र में वर्तमान सड़क पर आगामी 24 अगस्त को विशाल मानव श्रृंखला बनाकर किसान विरोध प्रदर्शन करेंगे।

शहीद खुदीराम बोस को याद किया

वाराणसी (उ.प्र.) : 11 अगस्त को ए.आई.डी. वाई.ओ. एवं ए.आई.डी.एस.ओ. के संयुक्त तत्वावधान में गैर समझौतावादी धारा के अमर शहीद खुदीराम बोस का 106 वां शहादत दिवस वाराणसी जिला के सिगरा स्थित शहीद उद्यान में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रभात कुमार ने की एवं संचालन चन्द्रेश सिंह द्वारा किया गया। कार्यक्रम के मुख्यवक्ता कॉमरेड दीपक कुमार रहे। कार्यक्रम का प्रारम्भ कॉमरेड दिलीप कुमार के क्रान्तिकारी गीत से किया गया। सभा को ए.आई.डी. एस.ओ. के कॉ. मिथिलेश कुमार मौर्य व इन्दु कुमार शुक्ला, ए.आई.डी.वाई.ओ. के राजन प्रसाद मौर्य एवं कॉमरेड दीपक कुमार ने सम्बोधित किया। ए.आई.डी. वाई.ओ. के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष कॉ. दीपक कुमार ने खुदीराम बोस के जीवन-संघर्ष व जीवन दर्शन पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। कॉमरेड इन्दु कुमार शुक्ला ने अपने वक्तव्य में कहा कि ''हुकुमत की शक्ति जनता की अज्ञानता में निहित होती है।''

अध्यक्षीय भाषण के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

5 अगस्त, कॉमरेड शिवदास घोष ....

(पृष्ठ 2 का शेष)

भवन, न्यू सुभाष नगर, भोपाल में सर्वहारा के महान नेता और इस युग के महान् मार्क्सवादी चिन्तनकार कॉ. शिवदास घोष के 38वें स्मरण दिवस पर एक राज्य स्तरीय आमसभा की गई। सभा की अध्यक्षता पार्टी की राज्य सांगठनिक कमेटी के सदस्य कॉ. रामावतार ने की। सभा को पार्टी के राज्य सचिव कॉ. उमा प्रसाद ने भी सम्बोधित किया। सभा का संचालन राज्य सांगठनिक कमेटी के सदस्य कॉ. जे.सी. बरई ने किया।

सभा के मुख्य वक्ता पार्टी के झारखण्ड राज्य सचिव कॉ. रबीन समाजपति ने कॉमरेड शिवदास घोष के जीवन-संघर्ष पर प्रकाश डाला। कॉ. घोष 13 साल की उम्र में आजादी आन्दोलन में कूद पड़े थे। उस समय के एक क्रान्तिकारी संगठन अनुशीलन समिति में रहे। जब उन्होंने देखा कि आजादी आन्दोलन की सारी कुर्बानियों के फल मुट्ठीभर पूंजीपति हड़पते जा रहे हैं और जो आजादी मिलेगी उससे मानव द्वारा मानव के शोषण का खात्मा करने का क्रान्तिकारियों का सपना पूरा नहीं होगा। अपने इस तजुर्बे की तीव्र वेदना से और लेनिन की इस सीख को समझकर कि बिना सही कम्युनिस्ट पार्टी के क्रान्ति नहीं हो सकती और चूंकि सीपीआई सही कम्युनिस्ट पार्टी नहीं बन पाई, अत: उन्होंने अप्रैल 1948 में एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) की स्थापना की और कष्टसाध्य संघर्ष करते हुए इसे इतना पुष्टपोषित व मार्गदर्शित किया कि यह आज देश के 23 राज्यों के लोगों में गहरी जड़ें जमा चुकी है। यह पार्टी मेहनतकश जनता को उन्नत सर्वहारा संस्कृति से लैस कर जगा रही है, उसे संगठित कर जनजीवन के ज्वलंत मुद्दों पर जनआन्दोलन कर रही है। पार्टी के बढ़ने की जबरदस्त संभावनाएं खुल रही हैं। मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष चिन्तनधारा न केवल भारतीय बल्कि विश्व क्रान्ति की राह रोशन कर सकती है और जनता को पूँजीवादी शोषण-जुल्म से निजात दिला सकती है।

उन्होंने आगे कहा कि आज विश्व साम्राज्यवाद-पूँजीवाद का अंग होने के नाते भारत का पूँजीवाद भी तीव्र बाजार संकट से ग्रसित है और इसका बोझ आम लोगों के कंधे पर डाल रहा है। शोषण-अत्याचार को और भी तीव्र करते हुए प्रशासनिक फासीवाद थोप दिया है और अच्छे दिन लाने के नाम पर उसे ही तीव्र कर रहा है। इस स्थिति में हमें जनता की ज्वलंत समस्याओं को लेकर जोरदार जनआन्दोलन गठित करना चाहिए जिसमें तमाम प्रगतिशील, वाम एवं जनवादी शक्तियों को एकजुट करना चाहिए। जनता में फैले अंधविश्वास, कुसंस्कार से धैर्यपूर्वक मुक्त कर उनमें वैज्ञानिक विचार बढ़ाएं। दु:ख-तकलीफ में उनके साथ रहें और उन्हें सेवा प्रदान करें और साथ ही उनकी जायज मांगों के लिए जन संघर्ष समितियाँ बना कर संघर्ष भी करें।

सागर (म.प्र.) : 5 अगस्त को पार्टी के तिली कार्यालय में एस.यू.सी.आई. (कम्युनिस्ट) सागर जिला ईकाई के तत्वावधान में इस युग के महान् मार्क्सवादी चिन्तनकार कॉ. शिवदास घोष की 38वीं बरसी पर एक आमसभा की गई। सभा की अध्यक्षता पार्टी के राज्य सांगठनिक कमेटी सदस्य कॉ. रामावतार शर्मा ने की। पार्टी राज्य सचिव कॉ. उमा प्रसाद मुख्य वक्ता रहे। सभा का संचालन पार्टी के राज्य सांगठनिक कमेटी सदस्य कॉ. अशोक कुशवाहा ने किया और गणेश पटेल व राकेश पटेल ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

पटना (बिहार) : कॉमरेड शिवदास घोष स्मृति दिवस पर बिहार की राजधानी पटना में 5 अगस्त, 2014 को आईएमए हॉल में आम सभा का आयोजन किया गया। सभा में सबसे पहले सर्वहारा के महान नेता, इस युग के महान मार्क्सवादी दार्शनिक व चिंतनकार, हमारे शिक्षक, पथप्रदर्शक तथा एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के संस्थापक महासचिव कॉमरेड शिवदास घोष की तस्वीर पर माल्यार्पण किया गया। सभा के मुख्य वक्ता थे एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के पोलित ब्यूरो सदस्य कॉ. कृष्ण चक्रवर्ती। सभा की अध्यक्षता एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) बिहार राज्य सचिव कॉ. शिव शंकर ने की। सभा को पार्टी के राज्य कमिटी के वरिष्ठ सदस्य कॉ. अरूण कुमार सिंह ने भी संबोधित किया।

कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती का भाषण

साथी सभापति, बिहार राज्य कमिटी के सदस्यगण, कॉमरेड एवं बन्धुगण,

5 अगस्त हमारी पार्टी के जीवन में एक विशेष दिन है। आप सभी जानते हैं इसी दिन हमारी पार्टी के महान शिक्षक, नेता एवं पथ प्रदर्शक, इस युग के महान मार्क्सवादी चिंतक तथा हमारी पार्टी के संस्थापक महासचिव कॉ. शिवदास घोष का देहांत हुआ था। तब से हमारी पार्टी देश भर में इस दिन को काफी आदर व सम्मान के साथ अति आवेग के साथ मनाती है। इस दिन को हम मुख्य रूप से दो उद्देश्य को लेकर मनाते हैं। एक है उनका जीवन संघर्ष, उनका महान संघर्ष, जिसके चलते वे दुनिया के एक महान नेता के रूप में उभर कर आये। मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, स्तालिन, माओ त्से तुंग के बाद जिन्होंने सिर्फ भारत के मजदूरों को ही नहीं, बल्कि दुनिया के मजदूरों को क्रांति का रास्ता दिखाया। क्रांतिकारी आंदोलन में जब भी कुछ गहरा सवाल पैदा हुआ, यहां तक कि संकट पैदा हुआ, तब कॉमरेड घोष ने उसका विश्लेषण करते हुए दुनिया के मजदूरों को रास्ता दिखाया। इसलिए वे मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, स्तालिन, माओ त्से तुंग जैसे कम्युनिस्ट बनकर सर्वहारा के महान नेता के रूप में दुनिया के सामने उभरे। आज सर्वहारा आंदोलन में जो निराशा-हताशा आप देख रहे हैं, इससे मुक्त होने का रास्ता भी उन्होंने दिखाया। जबकि उनके जीवनकाल में यह संकट था, लेकिन इसने भयंकर रूप लिया कॉ. घोष की मृत्यु के बाद। लेनिन-स्तालिन के देश रूस में दुनिया में सबसे पहले सर्वहारा वर्ग का शासन कायम हुआ। इसे सोवियत संघ भी कहा जाता था, जहां समाजवाद का विकास इस हद तक हुआ कि सारे पूँजीवादी देश अमेरिका, इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, इटली सब उससे पीछे रह गये। उसी सोवियत संघ में कुछ दिनों बाद कॉ. स्तालिन के देहांत के बाद जब से वह मार्क्सवाद-लेनिनवाद का रास्ता छोड़कर संशोधनवादी रास्ते पर चलने लगा तो उसके नतीजतन आखिरकार समाजवाद ध्वस्त हो गया। उसके चलते आखिर तक चीन में भी ऐसा ही हुआ, जहां माओ त्से तुंग के नेतृत्व में वहां के मजदूर-किसानों ने क्रांति की थी। एक पिछड़ा हुआ देश चीन भी बड़े पैमाने पर विकास के चलते ताकतवर देश बन कर उभरा था। वहां भी समाजवाद का पतन हो गया। यह तब हुआ जब कॉ. घोष की मृत्यु के बाद दुनिया में मजदूर आंदोलन के सामने कोई रास्ता नहीं रहा यानी कोई रास्ता दिखाने वाला नहीं था। लेकिन कॉ. घोष का चिंतन यदि हम ले जा सके, तो दुनिया के मजदूरों को रास्ता मिलेगा। कॉ. घोष का चिंतन इतना ताकतवर है।

आज का जो संकट है, आज की जो समस्या है, दुनिया भर में मजदूर आंदोलन में, विश्व सर्वहारा आंदोलन में जो रास्ता मिल पा रहा है, वह कॉ. घोष के चिंतन से ही मिल पा रहा है। हमारे देश के लिए यह बड़े दुख की बात है कि काफी कम उम्र में 53 साल में उनका देहांत हो गया। लेकिन इस कम समय में भी हमारी क्रांति के लिए जो विचार, जो चिंतन, जो जीवनबोध चाहिए, जो संस्कृति चाहिए, जो क्रांतिकारी रास्ता चाहिए, सारा कुछ कॉ. घोष दे गये हैं। यदि कोई कॉ. घोष के तमाम चिंतन को पढ़े और जीवन में अपनाने का प्रयास करे तो एक महान क्रांतिकारी हो सकता है। होगा ही। कॉ. घोष ने यह जो पार्टी बनायी, 'भारत में एसयूसीआई ही एकमात्र कम्युनिस्ट पार्टी क्यों' किताब आपने पढ़ी है, उनकी यह किताब दरअसल उनका एक भाषण है। कई लोगों ने सवाल किया था कि भारत में एसयूसीआई ही एकमात्र कम्युनिस्ट पार्टी क्यों है? यह जो कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (सीपीआई) है, तब यह कई टुकडों में बंटकर सीपीआई (एम) तथा बाद में सीपीआई (एम-एल) बन रही थी। सवाल आया था कि आप इन पार्टियों को क्यों सही कम्युनिस्ट पार्टी नहीं मानते हैं। उसके जवाब में कॉ. घोष ने जो चर्चा की, उसी पर यह किताब है। कॉ. घोष ने जिस विषय पर ज्यादा जोर दिया वह है मार्क्सवाद-लेनिनवाद की चर्चा, पढ़ाई। सीपीआई के नेताओं ने ऐसा नहीं किया, बात ऐसी नहीं है। सीपीआई के नेता ईमानदार नहीं थे, ऐसा भी नहीं था। यह भी नहीं कि वे लगनशील नहीं थे। वे लगनशील भी थे। ईमानदार भी थे। वे पढ़े-लिखे भी थे। वे मार्क्सवाद को अच्छी तरह जानते थे। वे क्यों कम्युनिस्ट पार्टी नहीं बना पाये। यह कॉमरेड घोष की चिंता का सबसे बड़ा विषय था। उन्होंने मार्क्सवाद-लेनिनवाद को सही मायने में समझने का प्रयास किया। भारत में सही ढंग से मार्क्सवादी आंदोलन शुरू करने का प्रयास किया। लेकिन वे सफल नहीं हुए। क्यों? यह दिखाते हुए कॉ. शिवदास घोष ने टिप्पणी की कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद को हमने पढ़ लिया, जान लिया, मार्क्स-एंगेल्स-लेनिन-स्तालिन की किताबों से हम उद्धरण दे सकते हैं, सुंदर विश्लेषण भी कर सकते हैं, लेकिन यदि हम इसे अपने जीवन में अमल में नहीं लाये, जीवन में इसका प्रयोग नहीं किया, तो हम मार्क्सवादी नहीं बन सकते। यदि हमने ऐसा नहीं किया और हम कहते रहें कि हम कम्युनिस्ट पार्टी हैं, तो वह कम्युनिस्ट पार्टी नहीं बन जाती है। इसलिए उन्होंने कहा कि कम्युनिस्ट पार्टी बनाने के लिए सबसे जरूरी जो संघर्ष है, वह है व्यक्तिगत जीवन में हम मार्क्सवादी हैं कि नहीं। हम कितना सुंदर भाषण देते हैं, इससे नहीं पता चलेगा कि हम अपने जीवन को किस प्रकार संचालित कर रहे हैं। हमने अपने जीवन को किस प्रकार से ढाला है? मार्क्सवाद का हमने अपने जीवन में कहां तक प्रयोग किया है? एक है चिंतन का, दूसरा है संस्कृति का। मार्क्सवाद पहले के तमाम दर्शनों से अलग है। कैसे अलग है? मार्क्सवाद वस्तु को केन्द्र कर वास्तविक जीवन को, वस्तु जगत को, समाज को जानने का प्रयास है। चिंतन का जो विकास हुआ—वह उन नियमों को जानने का ही प्रयास करता है। अनुमान से यदि हम जानने का प्रयास करेंगे तो जान नहीं पायेंगे। मार्क्स ने दिखाया कि वस्तु जगत वास्तविक है। वास्तविक का मतलब क्या है? हम चाहें, न चाहें, रहें, न रहें—यह वस्तु जगत है। हम यदि मर भी जायें, अभी-अभी यदि हम मर जायें, तब भी तो ये माइक्रोफोन रहेगा। इसका जो नियम है वह काम करता रहेगा। हम चले जायेंगे तो कोई दूसरा व्यक्ति इसका इस्तेमाल करेगा। इसलिए इसका नियम इसमें है। वस्तु का नियम वस्तु में है। इन्सान के दिमाग में जानने की, सोचने की, विचारने की क्षमता है। उसी का इस्तेमाल कर हम जान सकते हैं। ऐसा नहीं कि वस्तु ही नियम से संचालित होती है बल्कि यह सारी दुनिया नियम से संचालित होती है। ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो नियम के बाहर है। वह नियम वस्तु जगत का नियम है, वास्तविक नियम है। वास्तविक नियम को जानने के लिए इन्सान ने हजारों-हजार साल से संघर्ष किया है उससे जो हासिल किया है, वही है विज्ञान। विज्ञान को आधार करके हम वस्तु जगत को जान सकते हैं। यदि हम उसे जान सके, तो हम उस पर क्रिया कर सकते हैं। जिसे हम जानते नहीं, उस पर हम क्रिया नहीं कर सकते। तो मार्क्सवाद एक महान दर्शन क्यों है? इसलिए कि उसने इन्सान के हाथ में एक हथियार दिया, वह हथियार है द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद। वस्तु को जानने का, समझने का, उस नियम पर क्रिया करने की क्षमता जो देता है वही है द्वन्द्वात्मक भैतिकवाद। परीक्षण-निरीक्षण एवं प्रमाण पर निर्भर कर चलना होगा। मन मुताबिक कोई विचार नहीं चलेगा। यह पानी है या दूध है, इसे जानने के लिए, वास्तविक नियम को जानने के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण और विचारधारा को अपनाना चाहिए। तब पता चलेगा कि कौन क्या है। तभी हम उस पर क्रिया कर सकते हैं। इसलिए मार्क्सवाद ही एकमात्र दर्शन है जो दुनिया को बदल सकता है। पानी के नियम को यदि हम न जानें, तो पानी पर हम क्रिया नहीं कर सकते। बाढ़ आती थी। बाढ़ लोगों को, फसलों को बहा ले जाती थी। हम उस पर कुछ नहीं कर सकते थे। हम उसकी पूजा कर सकते थे, अनुरोध कर सकते थे। जब हमने नियम को जाना कि पानी नीचे की ओर जाता है, तो हमने उसकी प्रतिकूल स्थिति तैयार कर दी। जैसे यहाँ पानी को रखा गया है। पानी नीचे नहीं गिर रहा है। क्यों? फिर यदि हम इस नियम को जानते हुए अनुकूल स्थिति तैयार कर दें, तो पानी नीचे गिरेगा। क्या इसका मतलब नियम खत्म हो गया। नहीं, पानी में नियम है। इसलिए यदि हम ऐसा करें, तो पानी फिर गिरने लगेगा। पानी में गर्मी देने पर धीरे-धीरे भाप बन जाता है। पानी को भाप में रूपान्तरित कर दिया जा सकता है। पानी ऊपर चला जायेगा। इन्सान प्रकृति के नियम पर क्रिया कर सकता है, उसे बदल सकता है—यदि उसे प्रकृति के नियमों की जानकारी हो। यदि समाज के नियमों को इन्सान जान जाये, तो वह समाज को भी बदल सकता है। समाज बदलने का भी एक नियम है। जिस समाज ने जीवन को आज इतना दु:सह बना डाला है, उससे हमें मुक्ति चाहिए।

आज सिर्फ आर्थिक संकट है, बात ऐसी नहीं है। आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक यानी जीवन के तमाम क्षेत्रों में संकट ही संकट है। पढ़ाई-लिखाई कर ऊंची

(शेष पृष्ठ 6 पर)

बिहार में छात्र आंदोलन की लहर

आज से डेढ़ माह पूर्व, पटना वि. वि. के कुलपति ने ऐसे छात्र-छात्राओं को नामांकन पर प्रतिबंध लगा दिया जिन पर 2007 से 2014 के बीच एफआईआर हुई हैं। साथ ही वि. वि. प्रशासन ने कहा कि उनकी डिग्रियां रद्द कर दी जायेंगी। इस निर्णय के खिलाफ छात्रों के आंदोलन ने जोर पकड़ना शुरू किया। 5 जून को ऑल इंडिया डीएसओ ने पटना वि.वि. के कुलपति वाई सी सिम्हाद्री का पुतला दहन किया और मांग की कि यह फैसला वापस लिया जाय।

वि.वि. प्रशासन और पटना कॉलेज प्रशासन ने जैक्शन, मिंटो, नूतन और इकबाल छात्रावासों को तीन सालों के लिए प्रतिबंधित कर दिया। इसके विरुद्ध छात्रों का गुस्सा और तेज हो गया। इच्छुक छात्रों को हॉस्टल मिले इसकी मांग उठने लगी। इसको लेकर वि.वि. में अनिश्चितकालीन धरने का आयोजन किया गया। बावजूद इसके वि.वि. प्रशासन ने छात्रों से बात करना तो दूर रहा, कहीं छात्र समुदाय बड़ी संख्या में आंदोलन में न आ जाये इस भय से फैसला लिया कि छात्र, शिक्षक और कर्मचारी किसी भी तरह का धरना-प्रदर्शन नहीं करेंगे। छात्रों के जनवादी अधिकार पर हमले शुरू हो गए। इस घोर अलोकतांत्रिक निर्णय के खिलाफ छात्रों का गुस्सा और भड़क उठा। छात्रों ने मांग उठायी कि छात्रावासों की जर्जर स्थिति ठीक करो, पुस्तकालय चुस्त-दुरुस्त करो। शुद्ध पेयजल और शौचालय की व्यवस्था करो। इसी बीच पटना कॉलेज प्रशासन ने नामांकन प्रक्रिया में धांधली की। इस प्रकार एक मुद्दा और जुट गया।

बात न बनते देख छात्रों के धैर्य के बांध टूट गए और राजभवन मार्च का निर्णय लिया गया। इस राजभवन मार्च में शामिल छात्रों पर पटना के डाकबंगला चौराहे पर पुलिस ने लाठीचार्ज किया। लेकिन छात्रों के हौसले पस्त नहीं हुए। 16 जुलाई को छात्र कन्वेन्शन पटना कॉलेज परिसर में आयोजित की गई। 17 जुलाई को पुनः वि.वि. पर प्रदर्शन किया गया। इस पर भी लाठीचार्ज हुआ। 19 जुलाई से छात्र हड़ताल की शुरूआत हुई। कॉलेज-वि.वि. पूर्णतः बंद रहा। आंदोलन आगे बढ़ता गया। वि.वि. प्रशासन एक पर एक घोर अलोकतांत्रिक निर्णय लेता गया। वि.वि. ने निर्णय लिया कि जो छात्र कक्षा में अनुपस्थित रहेंगे उन्हें 50 रु. प्रतिदिन के हिसाब से जुर्माना देना होगा। अगर लगातार 5 दिन अनुपस्थित रहते हैं तो उन्हें टी.सी. देकर कॉलेज से निकाल दिया जाएगा। छात्रों का गुस्सा और भड़क उठा। अपनी तमाम मांगों को लेकर छात्रों ने विधानसभा मार्च का आयोजन किया। इस पर भी पुलिस ने कहर बरपाया। छात्रों को पुलिस ने दौड़ा-दौड़ाकर पीटा। बहुतों का सर फट गया। दर्जनों छात्र गंभीर रूप से घायल हो गये। छात्राओं के साथ बदतमीजी की गयी। अभद्र व्यवहार किया गया। 7 छात्र नेताओं को गिरफ्तार किया, जिनमें ऑल इंडिया डीएसओ की पटना जिला सचिव सरोज कुमार सुमन, पुष्पा कुमारी, सुमन लता मौर्या, साधना कुमारी, शिमला मौर्या, दीपिका कुमारी सहित अन्य छात्र-छात्राएं शामिल थे। इस बर्बर लाठीचार्ज के खिलाफ 25 जुलाई को पूरे प्रदेश में काला दिवस मनाया गया और विरोध प्रदर्शन किया गया। उसके बाद प्रदेश भर में चक्का जाम हुआ। इस आंदोलन की लहर ने पूरे बिहार के छात्रों को आंदोलित किया। पटना वि.वि. कुलपति लगातार घोर अलोकतांत्रिक कदम उठाते जा रहे हैं। 6-9 अगस्त को सभी कॉलेजों में जनमत संग्रह का कार्यक्रम किया गया।

वि.वि. द्वारा लिया गया अब तक का सबसे घोर अलोकतांत्रिक निर्णय यह है कि वि.वि. को निजी सुरक्षा एजेंसी के हवाले किया जाएगा। मतलब 51 निजी सुरक्षा गार्ड लगाए जायेंगे, जिससे छात्रों पर 6 लाख 24 हजार का अतिरिक्त आर्थिक बोझ लादा जाएगा। इस प्रकार वि.वि. में निजीकरण की प्रक्रिया शुरू हो गई है। इतने दिनों के आंदोलन में कुलपति का रुख अड़ियल और तानाशाहीपूर्ण रहा है और सरकार इसमें हस्तक्षेप नहीं कर रही है। आंदोलन जारी है...।

शिक्षा समस्याओं के खिलाफ ए.आई.डी.एस.ओ. का 7वां कॉलेज छात्र सम्मेलन सम्पन्न

गुना (म.प्र.) : सेमेस्टर प्रणाली, ऑनलाइन प्रणाली व कॉलेज में व्याप्त तमाम अव्यवस्थाओं के खिलाफ व छात्राओं की सुरक्षा की मांग पर 3 अगस्त को स्थानीय अग्रवाल धर्मशाला में छात्र संगठन ऑल इंडिया डीएसओ की पी.जी. कॉलेज गुना ईकाई द्वारा 7वां कॉलेज छात्र सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन में शिक्षा-विरोधी नीतियों व कॉलेज की समस्याओं को लेकर प्रस्ताव व छात्र नेताओं पर किये गये हमले के खिलाफ निन्दा प्रस्ताव पारित किया गया। प्रस्तावों के समर्थन में अनेक छात्रों ने बात रखी।

सम्मेलन के मुख्य अतिथि डी.एस.ओ. के ऑल इंडिया सचिवमण्डल सदस्य कॉमरेड मुदित भटनागर ने कहा कि सरकार के द्वारा शिक्षा के निजीकरण व व्यापारीकरण को तीव्र गति से लागू करने के लिये शिक्षा का केन्द्रीयकरण किया जा रहा है जिससे कॉलेज व यूनिवर्सिटी के जनवादी अधिकारों का हनन हो रहा है। इसी के तहत आधारभूत पाठयक्रमों जैसे इतिहास, भाषा, समाजशास्त्र, दर्शनशास्त्र इत्यादि कोर्स खत्म कर रहे हैं। होटल मैनेजमेंट, फैशन डिजाइनिंग, पार्लर मैनेजमेंट आदि कोर्से लागू किये जा रहे हैं। एक तरफ सेमेस्टर प्रणाली के तहत ज्ञान को खण्ड-खण्ड कर पढ़ाया जा रहा है। दूसरी तरफ शिक्षा को बाजार के रूप में ढालने के लिये वी वॉक को लाया जा रहा है। उन्होंने सभी छात्रों से शिक्षा-विरोधी नीतियों के खिलाफ जोरदार आंदोलन गठित करने की अपील की।

सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए डीएसओ जिलाध्यक्ष कॉ. सचिन जैन ने छात्र नेताओं पर हमलों की निन्दा करते हुए कहा कि राजनीति उच्च स्तर की हृदयवृत्ति है राजनीति में ऊची संस्कृति न हो तो कोई आंदोलन आगे नहीं बढ़ सकता। इसलिए जो राजनीति कर रहे हैं उनका चरित्र भी उन्नत होना चाहिए अन्यथा वे राजनीति को बदनाम कर शासक वर्ग का ही हित साधेंगे। कार्यक्रम के अंत में छात्र आंदोलन को तीव्र गति प्रदान करने नई कॉलेज कमेटी का गठन हुआ जिसमें नारायणसिह चंदेल अध्यक्ष, सुनील सेन, अवतार चंदेल, शिवांगी सिसोदिया, उपाध्यक्ष, सोनम शर्मा सचिव, सतीश ओझा, नीता, पूजा, प्रगति, राधेश्याम, सचिव मंडल सदस्य बनाये गये। साथ ही 14 सदस्यीय कार्यकारिणी का गठन हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता नीरज बैरागी ने की। कार्यक्रम में सैकडों की संख्या में छात्र उपस्थित रहे।

कॉमरेड रामप्रसाद विश्वकर्मा लाल सलाम

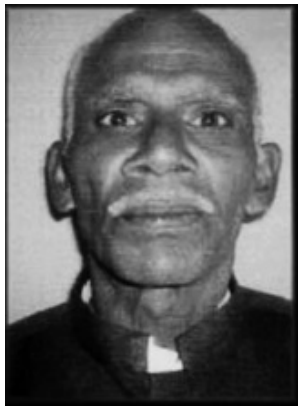

कॉमरेड राम प्रसाद विश्वकर्मा ने 11 अगस्त 2014 को प्रातः 8 बजे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के सर सुन्दरलाल हास्पिटल में इलाज के दौरान अंतिम सांस ली। उनको हृदयाघात हो गया था। वे पचपन वर्ष के थे। कॉमरेड विश्वकर्मा एस.यू.सी.आई.(कम्युनिस्ट) पार्टी के सम्पर्क में कॉमरेड डा. रामजीत विश्वकर्मा के माध्यम से 1991 में आये तथा पार्टी के आवेदक सदस्य बने। वे 1992 में ढकवा लोकल कमेटी के सचिव बने तथा पार्टी की सुलतानपुर जिला कमेटी के सदस्य बने। पहले पार्टी की ढकवा लोकल कमेटी सुलतानपुर जिला कमेटी से सम्बद्ध थी। बाद में इसको प्रतापगढ़ जिला कमेटी में शामिल कर दिया गया और वे प्रतापगढ़ जिला कमेटी के सदस्य बने। एस.यू.सी.आई.(कम्युनिस्ट) पार्टी में आने के बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा तथा जीवन पर्यन्त पार्टी के संघर्षों को आगे बढ़ाते रहे।

वर्तमान में ढकवा में राष्ट्रीय राजमार्ग-56 पर प्रस्तावित बाईपास के खिलाफ किसानों की जमीन व दूकानदारों की दूकानों को बचाने के लिए कॉमरेड विश्वकर्मा किसानों-मजदूरों व दूकानदारों को संगठित कर भूमि अधिग्रहण-विरोधी मोर्चा के बैनर तले आन्दोलन खड़ा करने में सक्रिय भूमिका निभा रहे थे। वे पट्टी तहसील के पूरा गाँव के एक साधारण परिवार में पैदा हुए थे। उनके पिता श्री सरजू प्रसाद विश्वकर्मा एक प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक थे। उनकी शिक्षा स्नातक तक थी तथा फिटर ट्रेड में आई.टी.आई. थे। 1996 में पूरा ग्राम पंचायत प्रधान चुने जाने पर उन्होंने ईमानदारी से गाँव की जनता की सेवा की। उन्होंने सबसे पहले ढकवा के डॉ. बी. आर. अम्बेडकर सामाजिक शिक्षण संस्थान में अध्यापन का कार्य किया तथा वर्तमान में डॉ. ब्रजेश कुमार पाण्डेय इण्टर कालेज में सेवारत थे। वे जहाँ भी रहे ईमानदार व कर्तव्यनिष्ठ बने रहे और लोगों के लिए प्रेरणा-स्रोत के रूप में अपने आप को स्थापित किया। उनके लड़के-लड़कियाँ व पत्नी एस.यू.सी.आई.(सी) पार्टी के समर्थक हैं। कॉमरेड विश्वकर्मा के व्यवहार से पूरे क्षेत्र की जनता उनकी ओर आकर्षित थी तथा उनके प्रति लोगों में अपार सम्मान व श्रद्धा थी। उनके निधन से पूरे क्षेत्र के लोग दुःखी हैं और पार्टी व जनआन्दोलन की अपूर्णीय क्षति हुई है।

पटना में स्मृति सभा को सम्बोधित करते हुए पार्टी के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती

5 अगस्त, कॉमरेड शिवदास घोष ....

(पृष्ठ 4 का शेष)

शिक्षा हासिल की, लेकिन नौकरी नहीं मिल रही है। सालों बीत गये, लेकिन नौकरी नहीं मिल रही है। महंगाई बढ़ रही है। उससे भी बढ़कर मजदूरों पर हमले हो रहे हैं। मालिक चाहने से ही मजदूरों को अपने कल-कारखाने से निकाल बाहर कर देते हैं। कुछ दिन पहले मानेसर गांव में जो मारूति कारखाना है, उसमें से 500 मजदूरों को निकाल दिया गया। कोई रोकने वाला नहीं। ये सारे जो हमले हो रहे हैं, इससे भी भयंकर जो बात हो रही है वह है महिलाओं के साथ बलात्कार हो रहे हैं। हर रोज किसी न किसी महिला के साथ बलात्कार हो रहे हैं। आज महिलाएं हमारे देश में सुरक्षित नहीं हैं। 6 साल की, 7 साल की बच्ची के साथ भी इस तरह की घटनाएं हो रही हैं। वे दमघोंटू स्थिति में हैं। इससे यदि बचना है, मुक्ति पाना है तो इसका रास्ता मार्क्सवाद ही दिखा सकता है। कॉ. घोष ने मार्क्सवाद को अपनाकर भारत की विशेष स्थिति में इसका प्रयोग करते हुए इसे समृद्ध किया। उन्होंने दिखाया कि पूँजीवाद आज संकट में है। तमाम दुनिया में पूँजीवाद आज संकट में है। भारत में पूँजीवाद 1947 में आजादी के बाद सत्ता में आया, लेकिन उसका विकास पहले ही हो चुका था। ब्रिटिश शासन, ब्रिटिश सरकार को यहाँ से भगाकर यहाँ के सामंती राजे-रजवाड़ों से सत्ता हथिया कर इस देश का बुर्जुआ वर्ग सत्ता पर काबिज हुआ। तभी से हमारे देश में पूँजीवादी शासन और शोषण चल रहा है। और उसी की वजह से जिन्दगी दिन पर दिन बदतर होती जा रही है। कांग्रेसी राज में पूँजीवादी शासन में गरीब और भी गरीब हुए हैं। अमीर और अमीर हुए हैं। पूँजीवाद के नियम में ही शोषण है। पूँजीवाद क्या है? पूँजीवाद है उत्पादन के तमाम साधनों यानी उद्योग-धंधें, जमीन कुछ मुट्ठीभर लोगों के हाथों में हैं। हम जो मजदूर-किसान, मध्यम वर्ग के लोग हैं, गरीब लोग हैं, हम अपने श्रम को बेचने को मजबूर हैं। मालिक हमारे श्रम को खरीदते हैं। वे हमें काम में लगाते हैं। हम उत्पादन करते हैं, सृष्टि करते हैं। और हमें मजदूरी क्या मिलती है? हम जो सम्पदा की सृष्टि करते हैं, वह हमें मजदूरी के रूप में नहीं मिलती। हमें उसका एक क्षुद्र हिस्सा ही मिलता है। यह जो इतनी क्षुद्र-सी मजदूरी हमें दी गयी और हमने इतनी विशाल जो सम्पदा सृष्टि की, वह सारा उसने अपनी जेब में भर लिया। दिन प्रति दिन उसकी सम्पदा बढ़ते-बढ़ते विशाल शक्ल ले रही है और हमारी जिन्दगी बद से बदतर होती हुई हम भिखारी बनते जा रहे हैं। पूंजीवाद में शोषण होगा ही। दुनिया में जहां भी पूँजीवाद है, हर जगह आप देखेंगे मजदूर आंदोलन पर हैं। क्यों? शोषण करते-करते मजदूरों को एकदम पंगु बना दिया, भिखारी बनाकर रास्ते में छोड़ दिया। इससे मुक्ति कैसे होगी? इससे मुक्ति होगी इस पूंजीवाद को उखाड़कर यदि हम समाजवाद ला सकें। समाजवाद क्या होता है? समाजवाद होता है वहाँ मालिकाना मजदूरों के हाथ में होता है। जो मजदूर है वही मालिक है और जो मालिक है वही मजदूर है। ये है समाजवाद।

आज स्थिति क्या है? आज उत्पादन मुनाफे के लिए हो रहा है। समाजवाद में उत्पादन मुनाफे के लिए नहीं होता। समाजवाद में समाज की जरूरत को पूरा करने के लिए उत्पादन होता है। ज्ञान-विज्ञान का विकास जनता की जरूरतों को पूरा करने के लिए, टेक्नोलॉजी का विकास नये-नये उत्पादन के साधनों की सृष्टि करने के लिए जिससे उत्पादन बढ़ता जाता है। जैसे रूस में हुआ था, चीन में हुआ था। सिर्फ समाजवाद ही ऐसा कर सकता है, जहां बेरोजगारी नहीं होती है, जहां हर व्यक्ति को शिक्षा राज्य देता है। सभी को महान बनने का एक परिवेश समाजवाद में होता है। समाजवाद के बिना इससे मुक्ति नहीं है। यह जो चिंतन करने की धारा है, यह जो विचार करने की धारा है, खासकर द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी विचारधारा, यह हमारे चिंतन के हर क्षेत्र में लागू होनी चाहिए, सिर्फ आर्थिक, राजनैतिक क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि जिन्दगी के हर क्षेत्र में जब हम इस मार्क्सवादी विचारधारा, द्वन्द्वात्मक विचार पद्धति को अपनाते हैं और सर्वहारा वर्ग की संस्कृति हासिल करते हैं, तभी हम कम्युनिस्ट कहलाते हैं। सर्वहारा संस्कृति और बुर्जुआ संस्कृति क्या होती है? बुर्जुआ संस्कृति और सर्वहारा संस्कृति में फर्क क्या है? बुर्जुआ संस्कृति का आधार है व्यक्तिगत मालिकाना, व्यक्ति की आजादी, व्यक्ति की मुक्ति। ठीक ही है। सामंती व्यवस्था से पूँजीवाद में आने पर क्या हुआ कि कुछ लोगों के हाथों में तमाम उत्पादन के साधन चले गये, मालिकाना चला गया, तमाम दुनिया की धन-सम्पदा उनके हाथों में चली गयी। पूँजीवादी व्यवस्था में वे कहते हैं इक्वलिटी (बराबरी) है, डेमोक्रेसी है–सभी बराबर हैं, सभी समान हैं। कहाँ समान हैं? टाटा और टाटा के मजदूर क्या बराबर हैं? बिड़ला और बिड़ला के मजदूर क्या बराबर हैं? क्या ऐसा हो सकता है? पूँजीवाद में इक्वलिटी की बात होती है पर कभी इक्वलिटी होती नहीं है। इक्वलिटी समाजवाद में, अधिकतर साम्यवाद में होती है, जहां पूंजीपति वर्ग और मजदूर वर्ग नहीं होगा। उत्पादन के तमाम साधनों पर समाज का मालिकाना होगा और उत्पादन भी काफी होगा। जैसे हवा को लेकर हम लड़ाई नहीं करते। आज नौजवान सांस ले रहे हैं। इसके लिए कोई झगड़ा नहीं है। जितनी भी सांस लो, कोई झगड़ा नहीं है। जबकि पाँच मिनट भी यदि आक्सीजन न मिले तो हम जिन्दा नहीं रह सकते। फिर भी इसके लिए झगड़ा नहीं है। लेकिन घड़ी को लेकर, गाड़ी को लेकर, सम्पत्ति को लेकर झगड़ा है। क्यों? मार्क्स ने दिखाया कि उत्पादन जब इतना प्रचुर हो जायेगा, जैसे हवा को लेकर कोई झगड़ा नहीं है, तब इन्सान-इन्सान में झगड़ा नहीं रह जायेगा। तुम जितना चाहो लो, जितना चाहो खाओ। हम सब मिलकर उत्पादन को बढ़ाते जायेंगे। तकनीकी विकास करते-करते हम उत्पादन को इस तरह से बदल देंगे कि उत्पादन हवा की तरह प्रचुर हो जायेगा। उसको लेकर इन्सान-इन्सान के बीच झगड़ा नहीं रहेगा। यह समाजवाद में ही हो सकता है।

यह चिंतन, यह सर्वहारा संस्कृति क्या है? मार्क्स, खासकर कॉ. घोष ने दिखाया है कि पूंजीवाद में मजदूर एक साथ मिलकर उत्पादन करते हैं। सामंती युग में क्या था? सामंती युग में भूदासों को जमीन छोड़कर जाने का अधिकार नहीं था। वह काफी बंधन में था। उसे आजादी नहीं थी। उस पर काफी जुल्म होता था। फिर भी भूदास अकेले-अकेले हल जोतते थे और जो उत्पादन करते थे, उसका उन्हें हिस्सा नहीं मिलता था। कभी-कभी मालिक खुश होकर थोड़ा ज्यादा दे देते थे। इसलिए व्यक्तिगत हित, व्यक्तिगत चिंतन, व्यक्तिगत स्वार्थ निहित था। लेकिन पूँजीवादी व्यवस्था में जब मजदूर कारखाने में आया, तब आप देखेंगे मजदूर अकेले-अकेले उत्पादन नहीं कर सकते। कुछ दिनों पहले झारखंड तो बिहार में ही था। वहाँ टाटा की जो स्टील फैक्ट्री है, कई हजार लोग एक साथ काम करते हैं। अकेले कोई काम नहीं कर सकता, उत्पादन नहीं कर सकता। किसी भी कारखाने में आप चले जाइए, कम हों या ज्यादा, मजदूर एक साथ मिलकर काम करते हैं। इसे हम सामूहिकता (कलेक्टिविज्म) कहते हैं। सामूहिक ढंग से मजदूर काम करते हैं। और जो उत्पादन करते हैं, जो कपड़ा बनाते हैं, कपड़े का कोई हिस्सा उन्हें नहीं मिलता। उनको तनख्वाह या मजदूरी मिलती है। जो कपड़ा बनाते हैं, उनको कपड़ा नहीं मिलता। जो मोटर कार बनाते हैं, उनको मोटर कार नहीं मिलती। उनको मजदूरी मिलती है। मार्क्स ने दिखाया कि मजदूर अपने लिए उत्पादन नहीं करते हैं, मजदूर उत्पादन करते हैं समाज के लिए, सभी के लिए, जिसमें वे भी हैं। तो उत्पादन का उद्देश्य है सामूहिक। इसलिए सर्वहारा वर्ग की संस्कृति है सामूहिकतावाद, व्यक्तिवाद नहीं। यह व्यक्तिवाद से अहम माना जाता है, सुंदर माना जाता है। व्यक्तिवाद में व्यक्ति के दमन की बात सोची जाती है। उसके स्थान पर सामूहिकतावाद (कलेक्टिविज्म) की जरूरत है। यह है सर्वहारा वर्ग की संस्कृति। यह है कम्युनिस्ट बनने का संघर्ष। कॉ. शिवदास घोष ने दिखाया कि मार्क्सवादी दृष्टिकोण, मार्क्सवादी विचारधारा को हासिल करना ही सर्वहारा वर्ग की संस्कृति है। इसे हासिल करना और साथ-साथ एक कम्युनिस्ट का रूप लेते हैं, यह जो संघर्ष है, इसे सीपीआई, सीपीएम तथा नक्सलवादी नेताओं ने नहीं किया। इन लोगों ने मार्क्सवाद को मान लिया। वे समझते हैं कि हम कम्युनिस्ट हैं, लेकिन कम्युनिस्ट बनने का जो यह मूल संघर्ष है–मार्क्सवादी दृष्टिकोण व मार्क्सवादी सर्वहारा संस्कृति को अपनाना, ऐसा उन्होंने नहीं किया। ऐसा किये बिना कोई कम्युनिस्ट नहीं बन सकता। यही है मूल बात। कॉ. शिवदास घोष ने इसी संघर्ष से पार्टी बनाना शुरू किया। तभी हमारी पार्टी एकमात्र कम्युनिस्ट पार्टी के रूप में उभर कर आयी। देश में एक ही कम्युनिस्ट पार्टी है। बाकी सारी पार्टियाँ नामधारी कम्युनिस्ट पार्टी हैं। देखिए, आज वे क्या कर रहे हैं। इतना बड़ा चुनाव हो गया। चुनाव में आपने क्या देखा?

पूँजीवाद का संकट यहां भी दिखाई देता है। वह दिखाई देता है मजदूरों के जीवन में। मजदूरों का जीना दूभर हो गया है। उन्हें जो मजदूरी मिलती है, उससे उनका काम नहीं चलता। यह संकट आप देख रहे हैं, यह पूँजीवाद की देन है। कांग्रेस के प्रति जनता में भयंकर गुस्सा क्यों पैदा हुआ? कांग्रेस पूँजीपति वर्ग की पार्टी है। जो भी सत्ता में रहेगा, उसे टाटा-बिड़ला-गोयनका-अम्बानियों की, पूंजीपतियों की सेवा करनी ही होगी। उसे जनविरोधी नीति लेनी ही पड़ेगी। पूँजीपतियों की सेवा करने के लिए जो नीति उन्होंने अपनायी, उसका मतलब है जनविरोधी नीति। जन जीवन दूभर हो गया। तभी व्यापक आंदोलन चल रहा था। ऐसी बात नहीं है कि जनता भाजपा को लाना चाहती थी। लोगों का कांग्रेस के प्रति काफी गुस्सा था। कांग्रेस को उखाड़ फेंकने के लिए लोगों ने भाजपा को वोट दिया। कांग्रेस ने पूँजीपतियों की सेवा करते-करते जन जीवन को काफी दुखी बना दिया। लोगों ने कहा, कांग्रेस को हटाओ। लेकिन कांग्रेस को हटाकर लायेंगे किसे? सीपीआई-सीपीएम अपने को मार्क्सवादी होने का

(शेष पृष्ठ 7 पर)

5 अगस्त, कॉमरेड शिवदास घोष ....

(पृष्ठ 6 का शेष)

दावा करती हैं। वे जनता को संगठित कर आंदोलन के रास्ते पर आगे बढ़ते तो कांग्रेस का राज खत्म होता, भाजपा नहीं आ पाती। लेकिन ऐसा हुआ नहीं। हमारी पार्टी ने प्रयास किया। जन जीवन की समस्याओं को लेकर हम लड़े। यदि ऐसा होता कि वामपंथी, जनवादी ताकतें किसानों के आंदोलन, मजदूरों के आंदोलन, बेरोजगार नौजवानों के आंदोलन, शिक्षक-छात्रों के आंदोलन, महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ आंदोलन, देश भर में छा गये भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन खड़ा करते, तो भाजपा सत्ता में नहीं आ पाती। आंदोलन के अभाव में पूँजीपति वर्ग ने अपनी एक दूसरी भरोसेमंद पार्टी को सहयोग और समर्थन दिया। उनकी भरोसेमंद पार्टी कांग्रेस जनता से अलग-थलग हो गयी थी। जनता उससे काफी नफरत करने लगी थी। इसलिए पूँजीपति वर्ग अपनी एक दूसरी भरोसेमंद पार्टी भाजपा को सामने ले आया। भाजपा भी बुर्जुआ की ही पार्टी है, टाटा-बिड़ला की ही पार्टी है। पूंजीपति वर्ग उसे सामने लाया और उसे वोट देकर जिताने को कहा। कहा गया कि यदि आप कांग्रेस को हराना चाहते हैं, तो भाजपा को वोट दें। हालांकि भाजपा कांग्रेस से भी ज्यादा प्रतिक्रियाशील पार्टी है। यह तो आप जानते ही हैं। यह साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देती है।

सभी जानते हैं कि गुजरात में क्या हुआ। वहां मुसलमानों का कत्लेआम हुआ। वे हिन्दू धर्म की बात करते हैं। क्या कोई हिन्दू मुसलमान को मारेगा? ईसाई को मारेगा? नहीं–यह सब हिन्दू धर्म में नहीं है। स्वामी विवेकानंद से बड़ा हिन्दू कौन था? आप स्वामी विवेकानंद की तमाम रचनाएं पढ़िए। उन्होंने साम्प्रदायिकता और जातिवाद के खिलाफ संघर्ष किया। और ये लोग हिन्दू धर्म के नाम पर मुसलमानों का कत्लेआम कर रहे हैं। यह कितना घृणित काम है। यह सब हिन्दू धर्म के लिए नहीं हो रहा है। जनता में धर्म के प्रति जो आवेग है, उसका फायदा उठाने के लिए वे हिन्दू धर्म की बातें करते हैं। उसका मतलब है मुसलमान-विरोधी मानसिकता। यह सब आपको समझना चाहिए। मजदूर-मजदूर होता है। उसमें हिन्दू-मुसलमान का भेद नहीं होता है। आप मुसलमान हैं, आप हिन्दू हैं, आप ब्राह्मण हैं, अनुसूचित जाति के हैं इससे क्या आता-जाता है? बिड़ला तो बड़ा हिन्दू है, बिड़ला मंदिर तो देश भर में हैं, इतना बड़ा जो हिन्दू है, उसके कारखाने में मुसलमान भी हैं, ईसाई भी हैं, बौद्ध भी हैं लेकिन ज्यादातर तो हिन्दू ही हैं। क्या बिड़ला कहेगा कि हम हिन्दुओं का शोषण नहीं करेंगे। ऐसा नहीं होता है। शोषण सबका होता है चाहे वह हिन्दू मजदूर हो या मुसलमान मजदूर या फिर ईसाई या बौद्ध मजदूर। इस बात को गहराई से आपको समझना होगा। जनता को बांटने के लिए, जनता के आंदोलन में फूट डालने का ही यह प्रयास है। हिन्दू-मुसलमान के नाम पर जो लोग जनता को बांट रहे हैं, वे पूँजीपतियों की ही सेवा कर रहे हैं ताकि मजदूर आंदोलन तेज न हो सके। दरअसल वे जनता के दुश्मन हैं। जो अनुसूचित जाति के नाम पर मजदूरों में फूट डालते हैं, वे मजदूरों के दुश्मन हैं। आम जनता को इन चीजों को गहराई से समझना होगा। शोषित जनता की एकता सबसे बड़ी शक्ति है, जो पूंजीवाद को उखाड़ फेंकेगी। इसी डर से ये पूंजीपति लोग, उनकी पार्टियां सिर्फ हिन्दू-मुस्लिम का ही झगड़ा नहीं, बल्कि बिहारी-बंगाली, बंगाली-आसामी, बिहारी-मराठी का झगड़ा भी खड़ा करती हैं। मुम्बई में बिहार-यूपी के मजदूर जब जाते हैं, तो उनको पीटा जाता है। मुम्बई मराठियों की है, ऐसी बातें कौन करते हैं? ये लोग इन्सानियत के दुश्मन हैं। ये लोग मजदूरों के दुश्मन हैं, शोषित जनता के दुश्मन हैं। शोषित जनता को इन चीजों को गहराई से समझना होगा। यह समझ मार्क्सवाद से ही आ सकती है।

तो मैं जो कह रहा था कि कॉ. घोष ने दिखाया कि सीपीआई, सीपीएम तथा बाद के सीपीआईएमएल-नक्सलपंथी –इन पार्टियों ने मार्क्सवादी दृष्टिकोण को अपनाने का बुनियादी संघर्ष नहीं किया, जीवन के हर क्षेत्र में वास्तविक तौर पर इस तरह से संघर्ष नहीं किया। व्यक्तिवाद से संघर्ष करते हुऐ सामूहिकतावाद को अपनाने का संघर्ष–हम सभी के लिए, शोषित जनता के लिए भी जरूरी संघर्ष है। व्यक्तिवादी चिंतन को लेकर कोई महान नहीं बन सकता। व्यक्तिवादी लोगों का सबसे बड़ा रूप क्या है? टाटा-बिड़ला। इनको कोई महान मानता है। लोग महान मानते हैं भगत सिंह को, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस को। लोग महान मानते हैं खुदीराम को–जिन्होंने आजादी के लिए अपना जीवन कुर्बान कर दिया। यह जो सामाजिक चिंतन है, निर्वैयक्तिक (इमपरसनल) संस्कृति है, उससे आदमी महान बनता है। आज सिर्फ इमपरसनल होने से नहीं होगा। मार्क्सवादी दृष्टिकोण और इमपरसनल–इन दोनों के सम्मिश्रण से, मिलन से जो अच्छा कैरेक्टर होगा, वही अच्छा कम्युनिस्ट होगा। वही अच्छा कम्युनिस्ट बनेगा, अच्छा इन्सान भी बनेगा। महान इंसान बनेगा। नौजवानों के समक्ष हमें इस संस्कृति को ले जाना होगा। देश के छात्र-नौजवानों को, मजदूर-किसानों को महान बनने का रास्ता कॉ. घोष ने दिखाया है। यह बात काफी महत्वपूर्ण है।

बुर्जुआ वर्ग भाजपा को सत्ता में लाया। भाजपा क्या कर रही है? भाजपा तर्क-विचार को नहीं मानती है। वह विश्वास, अंधविश्वास के आधार पर चलती है। हिन्दू धर्म के आधार पर उनका अंधविश्वास है। वहां धर्म नहीं है। सिर्फ अंधविश्वास है। भारत माता की जय कहकर अंध हिन्दू राष्ट्रवाद फैलाया जा रहा है। छात्र-नौजवानों के अंदर तर्क-विचार, सत्य को ढूंढने की मानसिकता पैदा करनी चाहिए। हमें विज्ञान चाहिए। विज्ञान बिना सत्य नहीं मिलेगा। विज्ञान सीखने का हमें प्रयास करना चाहिए। पूँजीपतियों का कहना है कि विज्ञान से क्या मिलेगा। विज्ञान से तकनीकी विकास होता है, लेकिन मानसिक शांति नहीं मिलती है। दूसरी तरफ ईश्वर-ईश्वर जपते युग बीत गया, हजारों साल बीत गये। शांति कहां मिली, सुख कहां मिला? दुनिया भर में मनुष्य के जीवन में जो भी सुख मिला है, वह विज्ञान की विजय के चलते ही मिला है। जो भी सुख-सुविधा की चीजें आप इस्तेमाल कर रहे हैं, वे सब कुछ विज्ञान की ही देन हैं। यह जो फोन है, हवाई जहाज है, राकेट है–यह कुछ भी धर्म से नहीं आया है, धर्म से नहीं बना है। यह सब कुछ बना है विज्ञान से। इतना ही नहीं, विचार करने की जो ताकत है, जिससे सत्य मिलता है, सत्य ही जीवन का सबसे बड़ा शांति का सम्बल है। आपकी जिन्दगी तभी आगे बढ़ेगी जब आप सत्य को जानेंगे। हर चीज के नियम को जानेंगे। जब आपके सामने अंधेरा रहेगा, आपको कुछ नजर नहीं आयेगा। जब आपको पता नहीं चलेगा कि आपके सामने शेर है या बाघ है या कि गड्ढा है, तो आप आगे नहीं बढ़ सकेंगे। जब अंधेरा छा जाता है, तो सामने भय लगता है। लेकिन आपके पास यदि टॉर्च हो, तो आप रोशनी डाल सकते हैं। इससे रास्ता आलोकित हो जाता है। आपके सामने क्या है, यह साफ हो जाता है। आप आसानी से हिम्मत के साथ आगे बढ़ सकते हैं। इसलिए ज्ञान की जरूरत है। इसलिए रोशनी की तुलना ज्ञान से की गयी है। ज्ञान ही एक शक्ति है। ज्ञान ही जीवन को रास्ता दिखाने का काम करता है। हमें रोशनी चाहिए। इसलिए हमें ज्ञान चाहिए। मार्क्सवाद तमाम विज्ञानों को संयोजित कर विज्ञानों के विज्ञान के रूप में आया। मार्क्सवाद विज्ञान भी है, दर्शन भी है। इसलिए मार्क्सवाद जिन्दगी को रास्ता दिखाता है। मार्क्सवाद मुक्ति का रास्ता दिखाता है। और इसे ही आधार बनाकर कॉ. घोष ने दिखाया कि भारत की आज जो स्थिति है, जिसे पूँजीवाद कहते हैं, वह संकट लेकर ही पैदा हुआ। यह संकट हर रोज बढ़ता ही जा रहा है। इससे मुक्ति पाने के लिए पूंजीवाद को उखाड़ फेंकना होगा। इसके अलावा पूंजीवाद से मुक्ति का दूसरा कोई रास्ता नहीं है। मुक्ति का यह रास्ता कॉमरेड घोष ने हमें दिखाया। हम सब कॉमरेड घोष के छात्र हैं। हमें कॉ. घोष की शिक्षाओं को गहराई से समझना होगा। उन्हें जीवन में उतारना होगा। साथ ही इसे आम लोगों के बीच ले जाना होगा।

आज जीवन के हर क्षेत्र में चौतरफा संकट व्याप्त है। जनजीवन चारों तरफ से संकट में घिर चुका है। आज कोई ऐसा क्षेत्र नहीं, जहां संकट न हो। कारण क्या है? कारण है संकटग्रस्त पूँजीवाद। पूँजीवाद के शोषण-शासन से हमें मुक्ति चाहिए और मुक्ति एकमात्र समाजवाद में ही संभव है। इसलिए हमें समाजवाद लाने की कोशिश करनी चाहिए। पूँजीवाद को उखाड़ फेंककर शोषित जनता, मजदूरों, छोटे किसानों, मध्यम वर्ग, छात्र-नौजवानों– सभी को गोलबंद करना है। भाजपा हो, कांग्रेस हो, बसपा हो या लालू प्रसाद का राजद हो–ये सभी हिन्दू-मुसलमान की बात करते हैं, अपर कास्ट-लोवर कास्ट की बात करते हैं। ये सभी दरअसल जनता के दुश्मन हैं। ये सभी पूँजीवाद की ही सेवा कर रहे हैं। ये जनता के आंदोलन में फूट डालने का काम कर रहे हैं। हमें इन चीजों को गहराई से समझना होगा। कॉ. घोष के चिंतन के आधार पर हमें जनता में इस समझदारी को ले जाना होगा। अगर हम ऐसा कर सके, तो हम समझेंगे कि आपका 5 अगस्त का कार्यक्रम सार्थक हुआ। इस बार के चुनाव में जनता ने कांग्रेस को हराया। हराकर भाजपा को लाया। लेकिन वह तो जनता की कांग्रेस से भी बड़ी दुश्मन है। यह काम किसने किया? जनता ने ही ना। यह दर्शाता है कि जनता की चेतना में काफी कमी है। उसकी राजनैतिक चेतना का स्तर बहुत नीचा है। जनता में चेतना कौन लायेगा? यह किसकी जिम्मेवारी है? ये जिम्मेवारी हमारी है। जनता में सही चेतना लाने का काम हमें करना है। क्योंकि, यह रास्ता हमें मिला है। यह चिंतन हमारे पास है। कॉ. घोष का चिंतन हमारे हाथ में है। उस चिंतन से हम रोशनी डाल सकते हैं। इन बातों को हमें जनता के बीच ले जाना होगा। जनता में जाना हमारा फर्ज बनता है। यदि हम ऐसा कर सके, तो भारत की स्थिति बदल जायेगी। और हमें यह करना ही है। सभी कॉमरेडों को 5 अगस्त के दिन संकल्प लेना चाहिए कि हम जनता के बीच जायेंगे। कॉ. घोष के चिंतन के आधार पर जनता को समझायेंगे। जनता को संगठित करेंगे। जनता के आंदोलन को छेड़ेंगे। उसे और भी आगे ले जायेंगे। इसे कोई नहीं रोक सकता। भारत की जनता कितनी है? 120 करोड़ जनता में से आधी जनता भी इन बातों को समझ जाये और उसके आधार पर संगठित हो जाये, तो समाज में बदलाव आने में देर नहीं लगेगी। इस काम को करेगा कौन? इस काम को कॉ. शिवदास घोष के छात्रों को ही करना होगा। पिछले लोकसभा चुनाव में सिर्फ भाजपा ही आयी, बात सिर्फ इतनी ही नहीं है। कांग्रेस-विरोधी मानसिकता को लेकर तमिलनाडु में एआईएडीएमके आयी, ओडिशा में बीजेडी आयी, बंगाल में टीएमसी आयी। ये सारी पार्टियां जनता की एकता को चकनाचूर करती हैं। तमिलनाडु में सरकारी कर्मचारियों ने आंदोलन किया था। जयललिता ने 1 लाख 50 हजार कर्मचारियों को नौकरी से निकाल दिया था। लेकिन चुनाव की सुविधा के लिए सीपीआई, सीपीएम उसके साथ गठबंधन करने की कोशिश कर रही हैं। उसके साथ मिलकर तीसरा मोर्चा बनाने की फिराक में हैं। तेलंगाना नया राज्य बना है। चन्द्रशेखर राव उसके मुख्यमंत्री बने हैं। तमिलनाडु में जयललिता, पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी, तेलंगाना में चन्द्रशेखर राव–इन सभी ने चुनाव में जीत दर्ज की। ये सभी घोर प्रतिक्रियावादी ताकतें हैं। सिर्फ भाजपा जीती, बात ऐसी नहीं है। अपने-अपने राज्य में ये लोग भी जीते हैं। इसका मतलब है देश भर में प्रतिक्रिया की ताकतें मजबूत हुई हैं। भाजपा के साथ-साथ ये प्रतिक्रियावादी ताकतें भी सत्ता में आ गयी हैं। इसका कारण क्या है? इसका कारण है हम कमजोर हैं, हम छोटी ताकत हैं। यदि हम बड़े होते, यदि हम तमाम देश में फैल गये होते और जनता को संगठित कर कांग्रेस के खिलाफ ही नहीं, कांग्रेस-भाजपा दोनों के खिलाफ यानी बुर्जुआ वर्ग की दोनों भरोसेमंद पार्टियों के खिलाफ यदि हम ताकतवर जन आंदोलन निर्मित कर पाते, तो ऐसा नहीं होता। जनता कांग्रेस-भाजपा दोनों को ही परास्त करती। लेकिन हम छोटी ताकत हैं और सीपीआई-सीपीएम आंदोलन में कहीं आ नहीं रही है। लेकिन देश की जनता आंदोलन चाहती है। जनता का जीना दूभर हो गया है। उसे संगठित कर आंदोलन में लाना है और उस आंदोलन को तेज कर देश भर में आंदोलन की एक विशाल ताकत खड़ी करनी है। ऐसा करने का विचार भी हमारे पास है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद का चिंतन, कॉ. घोष का चिंतन इतना ताकतवर है कि हम जहाँ भी जायें, उससे जनता आकर्षित होती है। आम लोग सुनते हैं तो मानते हैं कि कॉ. शिवदास घोष की बातें हमारी ही बातें हैं। पूरे देश में आप जहाँ भी जायेंगे, कहीं भी कॉ. शिवदास घोष के चिंतन का विरोध आपको नहीं मिलेगा। हाँ, कुछ प्रतिक्रियावादी इस चिंतन का विरोध करते हैं। वे जानते हैं कि इस चिंतन में ही उनका मृत्यु बाण निहित है। इसलिए इस बात को हमें गहराई से समझना होगा, जीवन में उतारना होगा। उसे हमें समाज में फैलाना है। जनता के बीच ले जाना है। आप ऐसा करेंगे। इसी उम्मीद के साथ आज मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ।

इंकलाब जिन्दाबाद!

सोशलिस्ट यूनिटी सेंटर ऑफ इंडिया (कम्युनिस्ट) जिन्दाबाद!

सर्वहारा के महान नेता कॉ. शिवदास घोष लाल सलाम!

●●●

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2012-2014
Posting at IPMBC on 7–8 and 22–23 Fortnightly , Date of Printing :20 August, 2014

पटना में ''वामपंथी–जनवादी ताकतों में बिखराव और मौजूदा चुनौतियां'' विषयक वार्ता

पटना में परिचर्चा को संबोधित करते हुए कॉ. कृष्ण चक्रवर्ती

एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) पटना जिला कमिटी के तत्वावधान में 4 अगस्त को बिहार माध्यमिक शिक्षक संघ भवन सभागार में ''वामपंथी-जनवादी ताकतों में बिखराव और मौजूदा चुनौतियां'' विषयक वार्ता आयोजित की गयी। वार्ता को संबोधित करते हुए एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) पोलित ब्यूरो सदस्य कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती ने कहा कि देश की जनता आंदोलन चाहती है। यही वजह है कि अन्ना हजारे के आंदोलन के साथ काफी लोग जुड़ गये थे। लेकिन बड़ी वामपंथी पार्टियां–सीपीआई, सीपीएम आंदोलन की जन आकांक्षा को दरकिनार कर जन आंदोलन के मैदान से दूर रहीं। कॉमरेड चक्रवर्ती ने कहा कि पिछले लोकसभा चुनाव में कोई मोदी लहर नहीं थी। महंगाई सहित जनविरोधी नीतियों को लेकर कांग्रेस के प्रति लोगों में काफी आक्रोश था और साथ ही वामपंथी आंदोलन की गैर मौजूदगी की वजह से प्रतिक्रियावादी ताकत भाजपा पूर्ण बहुमत के साथ सत्ता में आयी। कॉमरेड चक्रवर्ती ने एक प्रश्न के जवाब में कहा कि भाजपा के सत्ता में आने के बाद फासीवाद का खतरा काफी बढ़ गया है। वामपंथी आंदोलन पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि वाम मोर्चे ने चुनाव में जीतने के लिए फ्रंट बनाया, आंदोलन खड़ा करने के लिए नहीं। सीपीआई-सीपीएम के अवसरवादी और आंदोलन विमुख रुख ने फासीवादी ताकतों को फलने-फूलने की जमीन तैयार की। ये पार्टियाँ जिन राज्यों में सत्ता में रहीं, वहां पूंजीवादी जनविरोधी नीतियों को ही लागू किया। कॉमरेड चक्रवर्ती ने जन सवालों को लेकर तमाम वाम-जनवादी ताकतों को एकजुट होने और दीर्घस्थायी जन आंदोलन निर्मित करने की अपील की।

वार्ता में प्रो. नवीन चन्द्रा, प्रो. खगेन्द्र ठाकुर, प्रो. ओ. पी. जायसवाल, प्रो. एम. एन. कर्ण, प्रो. पूर्णेन्दु मुखर्जी, प्रो. आशीष रंजन, गणितज्ञ विकास राही, अधिवक्ता मदन सिंह, अरविन्द सिन्हा, अक्षय कुमार, गोपाल कृष्ण, बाल गोविन्द सिंह, तारकेश्वर ओझा, नन्द किशोर सिंह, आर. एन. झा इत्यादि लोगों ने हस्तक्षेप करते हुए अपने विचार रखे। वार्ता में एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) बिहार राज्य सचिव कॉ. शिव शंकर, राज्य कमिटी के वरिष्ठ सदस्य कॉ. अरूण कुमार सिंह, पटना जिला सचिव कॉ. साधना मिश्रा आदि भी उपस्थित थे।

गाजा के लोगों पर इजराइली हमला तुरन्त बन्द करो – आईएसीसी

15 जुलाई, 2014 को इण्टरनेशनल एण्टी-इम्पीरियलिस्ट को-ऑर्डिनेटिंग कमेटी (आईएसीसी) के महासचिव कॉमरेड माणिक मुखर्जी ने निम्नलिखित बयान जारी किया:

एक सप्ताह से ज्यादा अर्से से गाजा के निराश्रय फिलस्तीनियों पर इजराइल द्वारा किए जा रहे प्राणघातक हवाई हमलों की आईएसीसी कड़े शब्दों में निन्दा करती है। सैकड़ों लोग मारे गए जिनमें अधिकतर महिलाएं और बच्चे हैं और हजारों घायल हो गए हैं। साम्राज्यवादी ताकतों, खासकर अमेरिका के निरन्तर समर्थन की वजह से 60 साल से भी अधिक अर्से से फिलस्तीनियों पर ऐसे घातक हमलों में इजराइल लिप्त रहा है। ये ताकतें निरन्तर इजराइल को मिलट्री और आर्थिक सहायता तथा राजनयिक समर्थन देते आ रही हैं। इस झगड़े की मूल जड़ है फीलस्तीनी भूमि पर इस्राइल का नाजायज कब्जा, सार्वभौम स्वतंत्र फिलस्तीनी राष्ट्र की उनकी मांग को खारिज करना और शान्ति वार्ताओं के प्रति उनका दुराग्रह। मिस्र की मध्यस्थता में हालिया युद्ध विराम का प्रस्ताव, इजराइल द्वारा निरन्तर हमले किए जाने का रास्ता साफ करने की शातिराना चाल है। हमास के साथ कोई सलाह-मशविरा किए बिना ही युद्ध विराम प्रस्ताव तैयार किया गया था। हमास ने जायज तरीके से प्रस्ताव को ठुकरा दिया और एक अधिक समग्र समाधान की मांग की जो फिलस्तीनियों पर इजराइली हमलों का खात्मा कर सके। इजराइल द्वारा निर्मम हवाई हमले जारी हैं। आईएसीसी मांग करती है कि पाश्विक इजराइली हमले बन्द किए जाएं और इजराइल को उसके आपराधिक कृत्यों के लिए उचित सजा दी जाए। इसके दशकों लम्बे गैर-कानूनी कब्जे, अंतर्राष्ट्रीय कानून का उल्लंघन करने और एक रंगभेदी शासन कायम करने के लिए इस्राइल के खिलाफ प्रतिबंधों की फिलस्तीनियों की मांग का आईएसीसी समर्थन करती है। यह इजराइली सामानों के अन्तर्राष्ट्रीय बहिष्कार का आह्वान करती है। इजराइल के खिलाफ उनके बहादुराना संघर्ष में और शान्ति, न्याय तथा बराबरी के लिए उनके संघर्ष में फिलस्तीनियों के साथ आईएसीसी अपनी एकजुटता का इजहार करती है।

गाजा पर इजराइली हमले के खिलाफ साम्राज्यवाद -विरोधी मंच की ओर से 8 अगस्त को कोलकाता में विशाल प्रदर्शन

छात्र नेताओं पर हमले के दोषियों को गिरफ्तार करने की मांग पर डीएसओ ने की रैली

गुना (म.प्र.) : छात्र संगठन ऑल इंडिया डीएसओ के द्वारा पी.जी कॉलेज गुना में लगातार आंदोलन कर जीत हासिल की जा रही है जिससे बौखलाकर कॉलेज प्रशासन की मिलीभगत से एबीवीपी के कार्यकर्ताओं ने प्रवेशित छात्रों की मदद के पश्चात हॉल में बैठकर चर्चा कर रहे डीएसओ कॉलेज नेताओं पर अचानक हमला कर मारपीट शुरू कर दी। प्रोफेसर हॉल के बाहर तमाशाबीनों की तरह घटना को देखते रहे। इसके बाद एबीवीपी के कार्यकर्ता पुलिस व प्रेस के पास अपने कपड़े फाड़ कर गये और नेताओं पर मारपीट व गाली गलौच का आरोप लगाया। इससे साफ जाहिर है कि यह सब पूर्वनियोजित योजना के तहत प्रशासन की मिलीभगत से हुआ। डीएसओ कॉलेज कमेटी ने हमलावरों के खिलाफ पुलिस से एफआईआर दर्ज करने की मांग की लेकिन पुलिस ने सरकारी दबाब के कारण एफआईआर दर्ज करने से मना कर दिया। इसके खिलाफ ऑल इण्डिया डीएसओ, गुना जिला कमेटी के द्वारा 30 जुलाई को शहर में निंदा रैली निकालकर दोषियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने की मांग की गई।

रैली को डीएसओ के जिला अध्यक्ष कॉमरेड सचिन जैन ने संबोधित करते हुए कहा कि छात्र राजनीति उच्च स्तर की हृदयवृति है। छात्र राजनीति गुंडागर्दी करने के लिए नहीं बल्कि उच्च आदर्शों को स्थापित कर शिक्षा समस्याओं के खिलाफ छात्र आन्दोलन करने के लिए है। जो छात्र संगठन छात्र राजनीति को बदनाम कर शिक्षा के नीजीकरण-व्यापारीकरण को बढ़ाने में मदद कर रहे है उनकी कड़ी भर्त्सना होनी चाहिए। आंदोलन के दबाब में दोषियों पर पुलिस ने एफआईआर दर्ज की लेकिन राजनैतिक दबाब के कारण पुलिस ने बगैर कोई अपराध किए डीएसओ के कॉलेज नेताओं पर भी एफआईआर दर्ज कर दी है।

रैली का संचालन ऑल इण्डिया काउन्सिल मेम्बर अजीत पवार ने किया। ऑल इण्डिया काउन्सिल मेम्बर योगेश धाकड़ ने भी रैली को सम्बोधित किया।

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) की ओर से कॉ. सत्यवान द्वारा 3ए/38, डब्ल्यू.ई.ए., करोल बाग, नई दिल्ली-5 से संपादित व प्रकाशित तथा परम्परा प्रिंटिंग प्रेस, बी-70/83, इण्डस्ट्रियल एरिया, लॉरेंस रोड, दिल्ली-35 से मुद्रित, दूरभाष:011-25726631, sarvaharadrishtikon@yahoo.com